जोनी

लेखक

साजु

प्रकाशक

मार्गम बुक्स

पोस्ट बॉक्स - 3

बिलासपुर, छ. ग. 495001

Joni (Malayalam)
by
Saju

Translated by :
Anil J Abraham

First Edition
January 2007

Published by
Margams Books,
Bilaspur - 1, CG

Printed by
Graphic Systems & Co.,
Mallappally
Ph: 0469-2782260, 2785522

Available at
Emmaus Bible Institute
Post Box No. 3
Bilaspur - 495001
Chhattisgarh
Ph. 07752 244040, 09425549016

Suggested Price - Rs.30/-

For Private Circulation only

आमुख

जोनी....! यह एक ऐसी महिला की कहानी है जिसकी नियति जीवनभर व्हील चेयर पर रहने की है।

परमेश्वर ने जोनी को क्यों अद्‌भुत चंगाई नहीं दी? क्या जोनी के विश्वास की कमी के कारण...?

मुझे ऐसा नहीं लगता...। यदि सभी विश्वास करने वालों को चंगाई मिलती तो मैं सोचता हूं कि सबसे पहले पौलुस को चंगाई मिलनी चाहिए थी। अपने शरीर में चुभाए गए कांटे से मुक्ति पाने के लिए तीन बार प्रर्थना करने के बाद भी उन्हे चंगाई नहीं मिली। किन्तु परमेश्वर ने उसे एक नया पाठ सिखाया। ....बीमारी को यूं ही रहने दो। बीमारी की अवस्था में भी मेरा अनुग्रह तुम्हारे साथ रहेगा। निर्बलता में मेरी सामर्थ सिद्ध होती है।

जोनी कहती है, "मैं अपने व्हील चेयर को एक श्राप समझती थी। किन्तु धीरे धीरे मुझे यह समझ में आया कि यह श्राप नहीं बल्कि परमेश्वर का अनुगह है। एक ऐसा अनुग्रह जिसने मुझे नई उंचाइयों तक पहुंचाया।"

जिंदगी में अधिकांश लोग सुख समृद्धि का उपभोग करने वाले नहीं बल्कि तंगहाली और कष्ट का अनुभव करने वाले हैं। निराशा की गहराईयों में डूबते उतराते लोग...। जिन्हे अपनी जिंदगी ही निरर्थक लगती है...। मुझे आशा है कि ऐसे लोगों के लिए यह पुस्तक लाभदायक होगी।

परमेश्वर की सामर्थ बलवानों में नहीं अपितु निर्बलों में प्रगट होती है। बलवानों को परमेश्वर के सामर्थ की क्या आवश्यक्ता...?

इसिलिए हम अपनी निर्बलता में प्रसन्न हो सकते हैं क्योंकि ऐसी स्थिति में परमेश्वर की सामर्थ कार्य कर रही होती है।

प्रेमपूर्वक

साजु

उपलब्ध पुस्तकें

Hindi Books

मृत्यु, मृत्यु की घाटी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में

जार्ज मूलरः एक अद्भुत प्रार्थना योद्धा

बपतिस्मा बनाम मसीह की सहभागिता

उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं

मैं क्या प्रचार करूं

आत्मिक गीतावली

जोनी

Malayalam Books

Prarthana Veeranaya George Muller

Kerala Penthecost Charitram

Paramel Adisthanamidunnavan

Priska

Penthecost: Ashangakalum Pratheekshakalum

Sangeerthana Kiranangal

Joni

DL Moody

Oru Maranam, Marana Nizhal Thazhvara, Athyunnathante Maravidavum

Kristhuvinodu Cheruvan

Nirasha Me Asha

Jalasechanam

Yeshuvinte Kunjadugal

उपरोक्त पुस्तकें प्राप्त करने हेतु निम्न फोन नंबरों पर संपर्क करें-

07752 244040, 09425549016

1

उसे लगा कि उसका सिर कहीं जाकर टकराया है। मानव शरीर में बिजली का झटका लगा। शरीर के ऊपर से वह नियन्त्रण खोने लगी।

समुद्र की गहराईयों में रेत के कण उठने लगे। जोनी का चेहरा रेत में धंसने लगा.....। "मैं कहां पर हूं? मैं यहां कैसे पहुंची? मेरे हाथों को क्या हो गया ? मेरे हाथ चल क्यों नहीं रहे हैं? चारों ओर पानी ही पानी नजर आ रहा है।"

कुछ देर बाद जब उसका मन स्थिर हुआ तब उसे समझ में आया कि वह समुद्र की गहराईयों में जा फंसी है।

वह नहाने के लिये उतरी थी। फिर क्या हुआ उसे नहीं मालूम। समुद्र में कूदने से पहले उसने जो गहरी सांसे ली थी वह अब समाप्त होने पर थी। वह अगले पल के प्राण वायु के लिये प्रयास करने लगी। अब सांस लेना ही होगा, परन्तु कैसे? चारों तरफ पानी ही पानी है।

जोनी के मन में बीते समय की यादें एक एक कर कौंधने लगी। दोस्त....माता पिता....जवानी की जोश में किये गये शर्मनाक कार्य....कहीं परमेश्वर हिसाब लेने के लिये मुझे बुला तो नहीं रहा?

"जोनी...."

दूर कहीं से किसी के पुकारने की आवाज सुनाई दी। "वह कौन है? परमेश्वर...? या मृत्यु?

"मैं मरने जा रही हूं..... मुझे नहीं मरना है। सामने गहरा अन्धकार है... कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। मेरी सहयता करो, प्लीज मुझे बचाओ।"

"जोनी, तुम कहां पर हो?"

"अब आवाज कुछ पास आ गयी है। यह काती है। काती थोड़ा जल्दी करो। मेरी सांस टूटने वाली है। मैं अभी मर जाऊंगी।"

"जोनी, तू यहां क्या कर रही है? क्या सीपी बटोर रही है? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि यहां बहुत गहराई है?"

जोनी को कुछ सुनाई नहीं दिया। काती उसे लेकर ऊपर की ओर तैरने लगी।

जोनी को लगा कि वह गिर जाएगी। काती कोशिश करने लगी कि जोनी उसके सहारे चल सके।

"काती, मुझे पकड़ लो, मैं गिर जाऊंगी।" जोनी ने कहा।

वास्तव में काती उसे अच्छी तरह पकड़े हुए थी। परन्तु जोनी को उसका स्पर्श भी महसूस नहीं हो रहा था।

जो लोग नहाने आये हुए थे, उन्हें लगा कि कुछ दुर्घटना हुई है। वे सब जोनी के आस पास इकट्ठे हो गये।

"कोई बात नहीं, सब ठीक हो जायेगा।" जोनी स्वयं को और आस पास के लोगों को सांत्वना देने लगी।

अस्पताल के आपातकालीन विभाग में बिस्तर पर जोनी निर्जीव पड़ी थी। हाथों में फाईल लिये हुए एक नर्स उसके पास आयी। बिना उसकी ओर देखे उन्होने पूछा, "नाम...?"

जोनी, काती और जय

"जोनी एरिक्सन...।"

"ठीक है, डॉक्टर अभी आएंगे। उससे पहले मैं तुम्हारे गहनों को उतार कर इस लिफाफे में डालकर इस आलमारी में रख देती हूं। यही यहां का नियम है।"

"मुझे यहां कितनी देर रहना होगा ? क्या मैं आज ही घर जा सकती हूं?" जोनी बिस्तर पर पड़े पड़े बोर होने लगी थी।

"ये सब मैं नहीं बता पाऊंगी। तुम डॉक्टर से ही पूछ लेना।

नर्स ने फाईल मेज पर डालकर आलमारी से बड़ी सी कैंची निकाल ली।

"आप क्या करने जा रही हैं ?" जोनी ने पूछा।

"तुम्हारे तैराकी के वस्त्रों को काटने जा रही हूं।

लेकिन यह तो एकदम नया है। कुछ दिन पहले इसे खरीदा है। यह मेरा प्रिय....।"

"बात मत करो। सब नियमानुसार होगा..... अब तुम्हें इसकी आवश्यक्ता नहीं पड़ेगी।"

उन्होने जोनी के तैरने वाले पोशाक को काटकर कचड़े के डिब्बे में डाल दिया। उनका चेहरा भावनाशून्य था। जोनी को लगा कि वह रो पड़ेगी।

नर्स के जाने पर पर्दे को हटाकर एक व्यक्ति कमरे में दाखिल हुआ।

"मैं डॉक्टर शेरिल हूँ। क्या आपका नाम जोनी है?"

"हाँ....."

"ठीक है जोनी, देखूं तो कि आपको क्या हुआ है।"

"डॉक्टर, मैं घर कब जा सकूंगी?"

जोनी यही जानना चाहती थी। किन्तु डॉक्टर ने उसकी बातों पर ध्यान दिये बिना एक सुई लेकर उसके पैर के तलवे पर चुभाया।

"क्या तुम्हे तलवे पर दर्द हो रहा है?" डॉक्टर ने पूछा।

"नहीं…"

इसके बाद डॉक्टर ने गरदन के नीचे एक एक स्थान पर सुई चुभाई। हाथ, पैर, पेट, कमर… सभी जगह सुन्न पड़ चुके हैं। अन्त में कंधे पर सुई चुभाया…। कुछ चुभन जैसी….।

"समुद्र तट पर भी कंधों पर स्पर्श का अनुभव हो रहा था।" उसने डॉक्टर से कहा।

डॉक्टर ने कुछ नही कहा। बाहर जाकर एक और व्यक्ति को लेकर वापस आया। उन्होने आपस में मेडिकल भाषा में बातचीत की। जोनी को केवल इतना समझ में आया कि उसे तुरंत ही एक ऑपरेशन की जरूरत है।

डॉक्टरों के जाने के बाद एक नर्स आकर जोनी के हाथों को धुलवाई। उसके बाद उसके नसों में सुई चुभाई। उसे जरा सा भी दर्द नही हुआ। एक और व्यक्ति बाल काटने वाला इलेक्ट्रिक मशीन लेकर आया। ये लोग क्या कर रहे हैं? उसे कुछ समझ में नही आया। वह उस उपकरण के द्वारा जोनी के सिर के पिछले हिस्से के बाल साफ करने लगा। उसने जोर से चीखना चाहा। पहले मेरा प्रिय तैराकी का पोशाक…. और अब मेरे प्रिय बाल….।

"ये लोग क्या कर रहे हैं? क्या इनको रोकने वाला कोई नहीं है?" उन सबको वह दूर झटक देना चाहती थी, लेकिन वह असहाय थी। "प्लीज मेरे बालों को मत काटना…।" जोनी सिसकने लगी। किसी ने उसकी तरफ ध्यान नही दिया।

क्रमशः उसे सिर भारी लगने लगा। पेट में कुछ हलचल सी महसूस होने लगी। नर्स ने जो बेहोशी का दवा उसे दी थी, उसी का असर था यह। वह धीरे धीरे बेहोशी के आगोश में जाने लगी।

2

“परमेश्वर सब कुछ भलाई के लिए ही करता है। जोनी, परमेश्वर का वचन ऐसा ही कहता है। निश्चय ही तुम्हारी इस दुर्घटना को परमेश्वर भलाई का कारण बनाएगा।”

डिक ने जोनी को सांत्वना देने का प्रयास किया। वह उसका मंगेतर था। किन्तु जोनी उसकी बातों को मानने के लिए तैयार नहीं थी।

“अभी इस अस्पताल में मुझे एक महीने से ऊपर हो गया है। देखो, कितना सफाई का अभाव है यहां पर। मैं इसमें कोई भलाई नही देख रही हूं।” उसने शिकायत किया। “कितने दिनों से मैं इस बिस्तर से चिपकी हुई हूं। दवाईयों के कारण सिर भारी हो गया है। मैं सो भी नही पाती हूं। रात भर डरावने सपने मुझे परेशान करते हैं। बताओ डिक, इसमें क्या भलाई हो सकती है ? इससे मेरा क्या भला होगा? मैं यह सब सह नहीं पा रही हूं। अब बस, बहुत हो चुका।”

जोनी की आँखे भर आयी।

"जोनी...।" डिक ने शांत भाव से पुकारा। "मैं तुम्हारी मुसीबतों को देख रहा हूं। मुझे मालूम है कि तुम बहुत परेशानी झेल रही हो। अब इसमें क्या भलाई है, यह तो मुझे नहीं मालूम। लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को दृढ़ता से थामे रहें। हम विश्वास करें कि सब कुछ का अन्त भला ही होगा।"

डिक की आवाज भारी हो चली थी। किन्तु अपने दुःख को भीतर दबाते हुए उसने पूछा, "मैं और कुछ पढ़के तुम्हें सुनाऊं...?"

"नहीं।" उसने तुरन्त कहा। "मैं आप की बातों पर इतनी जल्दी विश्वास नहीं कर सकती हूं। हो सकता है मैं परमेश्वर में इतना ज्यादा भरोसा नहीं कर पा रही हूं।"

"कोई बात नहीं।" डिक उसकी आँखो में देखने लगा। उसकी आँखें दुःख में डूबी हुई थी। वह रूमाल निकालकर उसकी आँसुओं को पोछने लगा।

कुछ देर तक दोनों शांत रहे। कुछ देर बाद डिक ने जोनी से विदा लिया। जोनी आई.सी.यु में एडमिट थी, जहाँ हर कोई आ नहीं सकता। लेकिन परिवार के लोग एक एक घन्टा छोड़कर पांच मिनट के लिये मरीज से मिल सकते थे। उसके दोस्त, कॅज़िन के नाम से उससे मिलने आते थे। कभी कभी कॅज़िनों की संख्या ज्यादा होने पर नर्सेस उससे चुहलबाजी करते थे। समय के साथ साथ उनमें से कई उसके मित्र बन गये। इसलिये पांच मिनट का सीमित समय उसके कॅज़िनों के लिये लम्बा होता गया।

उस दिन शाम को उसका एक पुराना मित्र और सहपाठी जयसन उससे मिलने आया। पहुंचते ही उसने कहा, "ओह जोनी, यह तो बहुत भयावह है। ...मैंने इतना नहीं सोचा था। ...यह तो बहुत बुरा हुआ।" जयसन उसके बिस्तर

के पास पहुंचकर उसे ऊपर से नीचे तक देखने लगा। “अच्छा, यहां से कब छुटकारा मिलेगा?” उसने पूछा।

“अभी आस पास तो सम्भव नहीं है जयसन। मुझे लगता है कि मुझे बहुत कुछ सीखना है। डिक कहता है कि मेरी इस अवस्था में से होकर परमेश्वर काम कर रहा है।”

“नहीं, परमेश्वर को इसमें मत घसीटो। देखो, तुम्हारे साथ एक दुर्घटना हुई। एक गम्भीर दुर्घटना। यही हकीकत है। इसमें परमेश्वर को क्यों लाते हो? तुम इस प्रकार से बिस्तर में पड़े पड़े परमेश्वर की इच्छा है, परमेश्वर सिखा रहा है ऐसा सब कह के अपने जीवन को बरबाद मत करो। दुर्घटनाएं किसके साथ नहीं होती। उसमें पड़ने के बाद उसका सामना करना चाहिए....हिम्मत के साथ....बस....।”

जयसन जोनी का एक अच्छा दोस्त था। जोनी की दशा देखकर वह अपने दुःख को रोक नहीं पा रहा था। किसी न किसी प्रकार वह उसे सांत्वना देने का प्रयास करने लगा। लेकिन इसमें परमेश्वर का नाम लेने के लिये वह तैयार नहीं था।

“तुम जल्द ही ठीक हो जाओगी। हम अच्छी बात की कामना करें। लेकिन उसके लिये जो बातें आवश्यक है उसे तुम्हें ही करना पड़ेगा। कभी भी धैर्य नहीं खोना।” जोनी से जयसन ने कहा। “मुझे मालूम है कि तुम बहुत धैर्यशाली लड़की हो। देखो, परमेश्वर की इच्छा, उसकी योजना... ऐसी सारी बातें कहना छोड़ दो।”

थोड़ा रुककर जोनी की ओर देखकर वह कहने लगा, “मुझे समझ में नहीं आता कि परमेश्वर (यदि ऐसा कोई है तो) कैसे ऐसी बातों की अनुमति देता है।”

“हाँ जयसन मैं भी कभी कभी ऐसा ही सोचती हूँ। लेकिन डिक कहता है कि

इसमें परमेश्वर की कुछ योजना है।”

“मुझे नहीं मालूम जोनी....हो सकता है कि मैं अधिक निकृष्ट बुद्धि का हूं। हमेशा दोष लगाता रहता हूँ। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इन सारी बातों में रूचि लेने वाला कोई ईश्वर ऊपर बैठा है। मैं ऐसी बातों में विश्वास नहीं करता।”

जयसन के जाने के बाद जोनी फिर अकेली हो गयी। छत की ओर देखते हुए वह समय काटने लगी। यहाँ आए हुए एक महीना हो चुका है। कोई भी तरक्की नहीं हुई है। जैसे जैसे दिन बीतते जा रहें हैं, मुसीबतें बढ़ती जा रही हैं। किसका कहना सही है। डिक का या जयसन का।

“मेरी लाडली बेटी क्या कहती है?” आवाज सुनकर जोनी सपनों की दुनियां से बाहर निकली। यह डॉक्टर हैरिस थे। वे जोनी को प्यार से इसी नाम से पुकारते थे।

“हुँ, तुम बहुत सुन्दर लग रही हो। क्या हाल चाल है? लग रहा है, अब बीमारी कम हो गयी है।”

“मुझे नहीं मालूम डॉक्टर....। मैं भी इसी बारे में सोच रही थी। मुझे क्या हो गया है, डॉक्टर हैरिस? डॉक्टर शेरिल से कुछ भी पूछो तो वे डॉक्टरी भाषा में बताते हैं, जो मुझे समझ में नहीं आती है। आप ही बताइये न कि मैं कब घर जा पाऊंगी?”

“ये तो मैं नहीं बता पाऊंगा। तुम्हारे केस में डॉक्टर शेरिल जैसी विद्वता मुझ में नहीं है। मैं तो बस....।”

“डॉक्टर हैरिस, आप झूठ बोल रहें हैं। आप को मालूम है..... बताईये, मुझे क्या हुआ है?”

वे जोनी के बिस्तर के पास टंगे चार्ट को देखने लगे। गम्भीरता के साथ क्षण

भर जोनी को देखते रहे। उसके बाद कृत्रिम प्रसन्नता चेहरे पर लाते हुए उन्होंने कहा। "अच्छी बात है बेटी, मैं आशा करता हूँ कि डॉक्टर शेरिल तुम्हें इन्सान की भाषा में सब कुछ समझा देंगे, मैं उनसे बात करता हूँ। तुम्हारा क्या विचार है?"

"मुझे भी लगता है कि यही ठीक रहेगा। मुझे भी अधिकार है कि अपने हालत के बारे में जानूँ।"

जोनी और डिक फिलबर्ट

अगले दिन डॉक्टर शेरिल के आने पर उसने उनसे पूछा। "डॉक्टर मुझे क्या हो गया है?"

डॉक्टर का उत्तर बहुत सरल था। "जोनी, तुम्हे याद होगा कि समुद्र के पास तुम्हारे साथ जो दुर्घटना हुई थी, उसमें तुम्हारी गर्दन की हड्डी के चौथे और पाचंवे जोड़ के बीच में एक टूटन हो गया है। जिसके कारण तुम्हारी सुश्मना नाड़ी पर

दबाव पड़ गया है।"

"तो क्या आप यह कह रहे हैं कि मेरी गर्दन टूट गयी है?"

"हाँ बेटी, यह सही है।"

"यदि ऐसा है तो मुझे मर जाना चाहिए था?"

"ऐसा ही होने की ज्यादा सम्भावना थी। लेकिन इस तरह की दुर्घटना में यह जरूरी नहीं कि सब लोग मर ही जाएँ। किन्तु तुम्हारी दुर्घटना बहुत ही गम्भीर है। दुर्घटना के चार हफ्ते बाद भी तुम्हारा जीवित होना यह सूचित करता है कि तुमने मृत्यु के खतरे को पार कर लिया है।"

जोनी बहुत भयभीत हो गयी। उसे नहीं मालूम था कि उसकी दुर्घटना कितनी भयानक है। डॉक्टर शेरिल और अस्पताल के अन्य कर्मचारियों के साधारण हाव-भाव और बातचीत के कारण वह यह अनुमान नहीं लगा पाई कि उसकी स्थिति इतनी गंभीर है। लेकिन अभी डॉक्टर शेरिल कह रही है कि उसकी दुर्घटना मृत्यु का कारण बन सकती थी। "हे परमेश्वर, मैं मृत्यु से बच गयी।"

"जोनी, तुम्हारा गर्दन टूटने के कारण गर्दन का नीचे का हिस्सा लकवा मार गया है। फिर भी तुम अपने आप को भाग्यवती कह सकती हो। क्योंकि ऐसी दुर्घटना के बाद कई बार लोग बच नहीं पाते हैं।"

"तू न केवल भाग्यवती है, बल्कि हिम्मतवाली भी है। तुम्हारे अन्दर गजब की इच्छा शक्ति है। जल्दी स्वस्थ होने के लिए इस इच्छा शक्ति को तुम्हें बनाए रखना होगा। तुम में थोड़ा और हिम्मत आने के बाद तुम्हारा फ़्यूशन सर्जरी होगा।"

"फ़्यूशन सर्जरी...!! वो क्या है? डॉक्टर, कृपया मेरी समझ में आने वाली भाषा में बोलिए, न।"

"वह एक तरह का पुर्नसंयोजन है। अभी तुम्हारी सुश्मना नाड़ी तुम्हारी गर्दन

की हड्डियों के बीच में फँसी हुई है। फ़्यूशन सर्जरी के द्वारा हम उसे पुनः यथास्थान में लाते हैं।"

'यथास्थान में लाना' शब्द ने उसे बहुत आनन्दित किया। "इसका मतलब, क्या मैं फिर से पुरानी जोनी बन जाऊँगी? यदि ऐसा हुआ तो कितना अच्छा होता? खुशी के वो दिन वापस आएंगे? कॉलेज के वे अच्छे दिन.... खाली समय की घुड़सवारी.....। डिक्की ने जो वचन दिया था, क्या उसका अर्थ यही है? क्या इसी प्रकार सब कुछ भलाई ही को उत्पन्न करता है? ऑपरेशन कब होगा?" जोनी अपनी उत्सुकता नहीं रोक सकी।

"जब तुम्हारी हिम्मत बढ़ जाएगी, अर्थात बहुत जल्द ही...।" शेरिल ने बहुत छोटा सा उत्तर दिया। फ़्यूशन सर्जरी में क्या कुछ बातें शामिल है और उसके द्वारा कितनी चंगाई मिलेगी यह जोनी नहीं समझ सकी। जल्दबाजी के कारण डॉक्टर शेरिल की पूरी बातों पर वह ध्यान नहीं दे सकी। उसने सोचा कि सुश्मना नाड़ी को सीधी करके गर्दन की हड्डियों को जोड़ने से सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। अर्थात् उसके निर्जीव पैरों में ताकत आ जाएगी,... वह चलने लगेगी। इस प्रकार से अच्छी होकर बहुत जल्दी ही वह घर जा सकेगी और पहले जैसे हर काम में सक्रिय हो सकेगी।

ऑपरेशन के तुरन्त बाद उसे आई.सी.यू. से दूसरे कक्ष में ले जाया गया। उसने इसका यह अर्थ निकाला कि वह अच्छी हो रही है। अन्यथा उसे आई.सी.यू. से क्यों हटाते?

जोनी के इन्तजार में उसके मम्मी पापा कमरे में ही थे। उन लोगों ने उसके कमरे को अच्छी तरह से सजा कर रखा था। उन्होने उस कमरे में जोनी के पसन्द के कुछ पेन्टिंग्स टाँगे रखे थे। उसकी सहेलियों और रिश्तेदारों ने जो शुभ कामना पत्र भेजे थे, उन्हे उन्होने जगह जगह पर चिपका रखे थे। खुशबू बिखेरने

वाले फूलों का एक अच्छा भण्डार उन्होने कमरे में इकट्ठा करके रखा जिसे उसके दोस्तों ने भेजा था। कुल मिलाकर उसे खुश करने वाली सभी चीजें उन्होने इकट्ठा कर रखी थी।

जोनी को स्ट्रेचर में डाल कर कमरे में लाया गया। उन्होने गीत गाकर उसका स्वागत किया। डॉक्टर शेरिल ने आश्वस्थ होकर गहरी साँस लिया।

सब कुछ अच्छे से बीत गया। "हम कह सकते हैं कि ऑपरेशन सफल रहा।" डॉक्टर शेरिल ने सबकी ओर मुखातिब होकर कहा। वहाँ एकत्रित लोगों के चेहरों पर सन्तुष्टि के भाव दिखाई दिये।

"अब ज्यादा ध्यान देने की आवश्यक्ता है। इस बीच जोनी ने काफी तरक्की कर ली है। अब आगे का कदम भी बहुत महत्वपूर्ण है।" जोनी की ओर देख कर डॉक्टर शेरिल ने कहा, "बेटी, संघर्ष का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हमारे मन में होता है। अर्थात् हमें किसी भी बात का सामना करने के लिए तैयार रहना है। तुम अभी बहुत स्वास्थ्य लाभ ले चुकी हो। मैं जानता हूँ कि तुम बहुत अशाँत और डरी हुई थी और क्रोधित भी थी। लेकिन निराशा तुम्हें अपने अधीन नहीं कर सकी। इस बात में मैं तुम्हारी प्रशँसा करता हूँ। लेकिन ये मत सोचना कि सब कुछ हमेशा इसी प्रकार नयापन लिए हुए होगा। अभी बहुत से लोग तुम्हें देखने आते हैं... उनके संदेश, सात्वना के शब्द, फूलों के गुलदस्ते....। लेकिन कुछ दिन बाद तुम्हारे दोस्त कॉलेज जाने लगेंगे। वे आएंगे तौभी बहुत कम समय के लिये। कई बार तुम्हें एकाकीपन का सामना करना पड़ेगा। जोनी, क्या तुम इन सब बातों के लिए तैयार हो? यदि नहीं तो तैयार हो जाओ। क्योंकि निश्चय ही ऐसा सब कुछ होने वाला है।" डॉक्टर शेरिल ने एक लम्बा भाषण दे डाला।

जोनी ने सब कुछ सुना। वह इस बात में मगन थी कि उसका आपरेशन सफल रहा। इसलिए डॉक्टर की बातों ने उसे निराश नहीं किया। "मुझे मालूम

है डॉक्टर, ऐसी बातों में समय लगता है। यह तो आपने पहले से ही बता दिया था। कुछ भी हो मैं स्वस्थ तो हो जाऊँगी ना... इतना काफी है। मैं इन्तजार करूँगी।" उसने प्रसन्नता के साथ कहा।

"लगभग कितने दिनों में सब कुछ ठीक हो जाएगा?" जोनी के पिता ने पूछा। मम्मी का प्रश्न कुछ अलग था। "डॉक्टर, आपने जोनी के सहेलियों के कॉलेज जाने के बारे में बताया था। क्या इसका मतलब यह है कि इस सेमेस्टर में जोनी कॉलेज नहीं जा पाएगी? इस सेमेस्टर के लिए हमने उसका फीस (fees) भर दिया है। क्या उसको अगले सेमिस्टर के लिये बदल दें?"

"उंह....।" डॉक्टर शेरिल अचानक उनकी तरफ मुड़े। कम से कम अगले सेमेस्टर के लिये....। "कुछ देर तक सोचने के बाद उन्होने फिर से कहा, "या फिर आप फीस को वापस ले लीजिए। मैं सोचता हूँ कि अब वह कॉलेज वगैरह नहीं जा पाएगी।"

सब लोग स्तब्ध रह गये। किसी ने ऐसे एक उत्तर की कल्पना नहीं की थी।

"डॉक्टर, आप यह क्या कह रहे हैं? क्या इसका मतलब यह है कि वह बहुत जल्द चल फिर नहीं पाएगी?" उसकी मम्मी का गला भर आया था।

"चलना फिरना!" डॉक्टर ने उनको घूरके देखा। "श्रीमती एरिक्सन, लगता है कि आपको अभी तक कुछ समझ में नहीं आया। जोनी अब चल नहीं पाएगी। इसके शरीर में जो चोट पहुँची है, वह शाश्वत है। फ्यूशन सर्जरी के द्वारा हमने उसके हाथों में शक्ति लाने का प्रयास किया है।"

'शाश्वत' शब्द जोनी के हृदय में एक तोप के गोले के समान लगा। क्षण भर के लिए उस कमरे में मौन पसर गया।

डॉक्टर शेरिल ने उसे फिर से सात्वना देने का प्रयास किया। "बेटी, यदि

तुम अच्छे से प्रयास करोगी तो बहुत जल्दी ही तुम अपने हाथों का उपयोग कर पाओगी, यह मेरा विश्वास है। देखो चल फिर न पाने वाले कई लोग बहुत सक्रिय जीवन बिता रहे हैं। वे घर साफ करते हैं, घर के अन्य काम करते हैं, कुछ लोग तो कार भी चलाते हैं। इसलिए चल फिर नहीं पाना इतनी दयनीय अवस्था नहीं है...। कोशिश करोगी तो तुम बहुत जल्द ही अपने हाथों का उपयोग कर पाओगी।"

ये ऐसे क्षण थे, जहाँ सात्वनादायक वचनों का कोई मोल नहीं होता। उस कमरे में उपस्थित सभी लोग जिन्दा लाश के समान हो गये थे। उनके सपनों का महल ढह गया था। जोनी की माँ ने अपने हथेलियों में अपने चेहरे को छिपा लिया। सबने समझ लिया कि वह रो रही है।

जोनी ने धीरज से काम लिया। उसने कहा, "मत रो मम्मी। गरदन की हड्डी टूटने के बाद भी कोई लोग चँगा हुए हैं, वे पुनः चले भी हैं। जब मैं आई.सी.यू. में थी तो इस प्रकार के बहुत से लोगों की कहानी भी सुनी भी हूं। फिर जोनी ने अपने आपसे कहा, "मैं निश्चय ही पुनः चल पाऊँगी। परमेश्वर भी मुझे फिर से चलते हुए देखना चाहता है... मैं ऐसा ही विश्वास करती हूँ। वह मेरी सहायता करेगा। मैं चल कर ही इस अस्पताल से जाऊँगी....।"

डॉक्टर शेरिल ने कुछ नहीं कहा। उन्होने मम्मी को सांत्वना दिया। पापा से हाथ मिलाया, फिर कमरे से बाहर निकल गये।

ऑपरेशन के बाद के दिन जोनी के लिये बहुत निराशजनक थे। पिछले दिनों की खुशियाँ फिर नहीं लौटेंगी, यह जानकर उसे बहुत गहरा आघात लगा था। उसका मनोबल गिर गया था। हप्तों उसने भोजन नहीं किया। उसके नसों में स्लाईन चढ़ता रहा। भोजन के बारे में सोचकर ही उसका मुँह कसैला हो जाता था। कभी कभी वह फलों का रस पी लेती थी। डॉक्टरों का कहना था कि यह

दवाई के साईड इफेक्ट के कारण भोजन के प्रति अरूचि हो रही है।

लेकिन दवाईयों का उपयोग उसके भोजन को ही प्रभावित नहीं किया, मानसिक रूप से भी वह भ्रमित हो गयी। अक्सर वह बेहोशी के हालत में रहती। उस समय वह डरावने सपने देखती रहती।

आगन्तुक उसे सांत्वना प्रदान करते थे। लेकिन उनमें से कई लोग मूर्खो के समान व्यवहार करते थे। हालचाल पूछने के बाद वे सब अपनी जिज्ञासा शान्त करने का प्रयास करते थे। कई लोगों को दिमाग खराब करने वाले प्रश्न पूछने में भी हिचक नहीं होती थी। इन्जेक्शन में दर्द नहीं होता? अपने दैनिक कार्यों से कैसे निवृत होते हो? कुल मिलाकर उन्हें सब बातें जानना है। कुछ लोग उसके शरीर में फिट किये हुए ट्यूब को बहुत सहानुभूति के साथ देखते। ऐसे समय आगंतुक उसे सांत्वना की जगह पीड़ा ही देते।

एक दिन जोनी के दो हाई स्कूल सहपाठी उसे देखने आये। वे दुर्घटना के बाद पहली बार उसे देखने आए थे। उस समय वह पेट के बल लेटी हुई थी। इसलिए वह आगंतुकों को नहीं देख सकती थी। वे जोनी को पहचान नहीं पाए। लेकिन बीच में जब उसने कुछ बात किया तब वे उसे पहचान पाए।

“एय.... जोनी!” सहेलियों में से एक उछल पड़ी। “हे मेरे प्रभु...।” दूसरी सहेली भी विस्मय पूर्वक उसे देख रही थी।

थोड़ी देर के लिये उनके बीच में मौन पसरा रहा। फिर वे दोनों दरवाजे की ओर दौड़ पड़े। उनमें से एक को उल्टी करते हुए जोनी ने सुना। एक सहेली सिसक रही थी।

जोनी को एक अज्ञात भय ने घेर लिया। उसे देखने आने वालों में से किसी ने भी अभी तक इतनी बुरी रीति से प्रतिक्रिया नहीं दिखाई थी। कुछ दिमाग खराब करने वाले प्रश्न और सहानुभूति से भरी नजर...। लेकिन इन्हें क्या हो

गया? ऐसा नहीं लगता कि अस्पताल की दुर्गन्ध और लोगों की दयनीय स्थिति न देख पाने के कारण वे ऐसी प्रतिक्रिया दिखा रहे हैं। निश्चय ही मुझमें ऐसी कुछ बात है जो वे सह नहीं पा रहे हैं। कुछ ऐसी बात जो मेरे प्रिय लोग स्वीकार कर रहे हैं और अन्य आगन्तुक मजबूरी में सह रहे हैं। वह क्या है ? उस शाम जोनी से मिलने उसके निकट सहेलियों में से एक सहेली जैकी आई। जोनी ने उससे कहा, "मुझे एक आईना लाकर दो जैकी।"

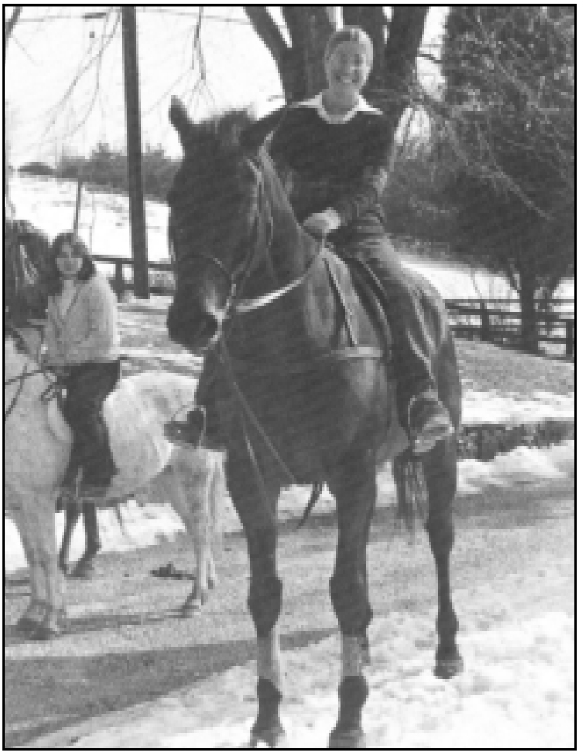

जोनी की बहन जय

वह पहले अचंभित हुई। फिर शान्त भाव से पूछी, "तुम आईना का क्या करोगी?"

"मैंने तुझसे आईना माँगा है। वह क्यों, किसके लिए... यह सब जानने की क्या आवश्यक्ता है ? तुम ला सकती हो या नहीं?" जोनी ने कठोर स्वर में पूछा।

"हूँ, ठीक है। अगली बार जब आऊँगी तब ला दूँगी।" जैकी ने उसे नाराज नहीं करने के लिए कहा।

“नहीं, अभी चाहिये। तुम जाकर नर्स से एक आईना माँग कर लाओ।”

“जोनी तुम अभी आईना का क्या करोगे? अगली बार जब मैं आऊँगी तब तुम्हारे घर से ड्रेसिंग टेबल के सुन्दर से आईने को लेकर आऊँगी।”

“जैकी,” जोनी ने थोड़ा जोर से कहा। “मुझे अभी आईना चाहिये।”

जैकी दुख के साथ कमरे से बाहर निकल गयी। नर्स के हाथ से आईना लेकर वापस आयी। धीरे से उसने उसे जोनी के चेहरे की तरफ पकड़ा। अपना चेहरा आईना के सामने देख कर वह डर के मारे चिल्ला उठी। “ओह नहीं... यह कितना डरावना है।”

जैकी भी स्थब्ध रह गयी। उसे लगा कि कहीं उसके हाथ से आईना छूट न जाए।

जोनी स्वयं पर काबू नहीं रख सकी। “हे परमेश्वर, तू मेरे साथ ऐसा कैसे कर सका? इतना अधिक मेरा पाप क्या था?”

वह आईने में प्रगट हुए अपने रूप को घूरती रही। उसकी आँखे दो बड़े गड्ढे के समान दिखाई दे रहे थे। जिनमें से दो काले गोले झलक रहे हैं। ऑपरेशन के लिए मुण्डन किये गये अपने सिर को और काले पड़ चुके दाँतो को देखकर वह घबरा गयी। वह स्वयं को किसी नर कंकाल से कम नहीं समझ रही थी। कंकाल के ऊपर लटकी हुई पीले रंग की चमड़ी।

अपने आप को देख कर उसे उबकाई सी आने लगी।

“जैकी, इस आईने को यहाँ से ले जाओ। उसने अपनी आँखों को जोर से बन्द कर लिया। अब जिन्दगी में कभी मुझे आईना नहीं चाहिये।”

जोनी आईने को हटाकर दुखी होकर पड़ी रही। कुछ देर तक दोनों ने आपस में बात नहीं किया। जोनी कुछ सोचती रही। अन्त में उसने जैकी को अपने पास

बुलाया। मानो कुछ रहस्य की बात कहने जा रही हो।

"मैं यह सह नहीं पा रही हूँ, जैकी। मैं मर रही हूँ। अभी से लगभग मैं मर चुकी हूँ। वे मुझे एक जिन्दा लाश के समान क्यों रखना चाहते हैं? मुझे तकलीफ पहुँचाने के लिए जिन्दा रख रहे हैं। वास्तव में उन्हें इसका अधिकार नहीं है। कुछ भी हो, मैं तो मर रही हूँ। फिर क्यों वे मेरी जिन्दगी को लम्बा खींचना चाह रहे हैं ?"

जैकी शाँत रही। वह जोनी की मनोदशा का अनुमान लगा सकती थी।

कुछ देर के मौन के बाद जोनी ने पुकारा, "जैकी......।"

जैकी ने उसकी ओर देखा। "जैकी, तुम मेरी थोड़ी सहायता करो।

"मैं कैसे तुम्हारी सहायता कर सकती हूँ?

"कैसे कहो तो........।"

"मैं भी स्पष्ट रीति से नहीं जानती,... बस तुम मुझे कुछ नींद की गोली लाकर दे दो।"

"जोनी, तुम यह क्या कह रही हो?" जैकी रो पड़ी! "तुम यह क्या कह रही हो कि मैं तुम्हें मार डालूँ!"

"तुम मुझे मारो मत....बस, तुम मरने में मेरी सहायता करो। देखो वैसे भी मैं मर रही हूँ। मेरी मुसीबतों को समाप्त करने में तुम मेरी सहायता नहीं करोगी? मैं हिल डुल सकती तो तुमसे सहायता नहीं माँगती। मैं खुद ही ये काम कर लेती।"

जोनी बहुत असहाय लग रही थी। क्रोध के मारे उसकी आँखें जलने लगी। "जैकी, कुछ नहीं तो तुम मेरे हाथों के नसों को काट दो। तुम्हें तो मालूम है,

मुझे जरा भी दर्द नहीं होगा। हाँ, यही ठीक रहेगा। यह मरने का सबसे अच्छा तरीका है। खून पूरा निचुड़ कर। जैकी, तुम कुछ तो करो, किसी के आने से पहले....।"

जैकी सिसकने लगी। "जोनी, कृपया ऐसी बातें मत करो ....।"

"लेकिन जैकी यदि तुम मेरे अनुसार करोगे तो, तुम मेरी सहायता कर रही होगी। यदि तुम मेरे प्रति थोड़ा भी दयाभाव रखती हो तो मेरे कहे अनुसार करो और मुझे इस नरक से मुक्ति दिलाओ। ऐसा करके तुम वास्तव में मुझे मार नहीं रही हो, मुझे बचा रही हो। बस, अब बहुत हो गया। मैं इस जिन्दगी से कूच कर रही हूं। वैसे भी मैं मर रही हूं। क्या मुझे देखकर तुम्हें ऐसा नही लगता?"

"जोनी तुम्हें नही मालूम कि तुम क्या चाह रही हो? मुझसे यह सब कुछ मत कहो। मुझमें तुम्हारी मुश्किलें देखने की सामर्थ नही है। अन्य लोगों से बढ़कर मैं तुझसे प्यार करती हूं लेकिन मैं तुम्हे मृत्यु के हाथ में नहीं सौंप सकती। सम्भवतः तुम बहुत जल्द ही ठीक हो जाओगी।"

जोनी ने कुछ नही कहा लेकिन कई बार वह निराशा के समय जैकी से इसी प्रकार सहायता मांगती। उसके असहयोग ने उसके क्रोध को और अधिक बढ़ा दिया। अब यह कैसे हो सकता है? रोज मिलने वाले नींद की गोली को इकठ्ठा करना होगा लेकिन हाथ पैर हिलाने में असमर्थ एक लड़की यह कैसे कर पाएगी?

कुछ नहीं तो कम से कम जैकी मेरे हाथ के नस को काट दे....... । लेकिन नही लगता कि वह ऐसा करेगी। अब तो अस्पताल के कर्मचारियों के द्वारा होने वाली किसी भूल या दुर्घटना ही एक मात्र सहारा है।

जैकी दिन प्रतिदिन ब्यूटीशियन के समान उसकी देखभल करती रही। बिस्तर में पड़े उस नर कंकाल को अन्य लोगों की दृष्टि में अधिक से अधिक सुंदर

दिखाने का प्रयास किया। जोनी के मन को खुश करने के लिए वह कुछ भी करने के तैयार थी।

"तुम बहुत जल्दी ठीक हो जाओगी जोनी।" जैकी ने उसे सांत्वना दिया। "प्रभु कहता है वह किसी को सहने से बाहर परीक्षा में नहीं डालता।"

"अच्छा, ऐसा है?" अपने निश्चल शरीर को देखकर व्यंग से पूछा। अपने इस निःसहाय अवस्था में वह हर बात में दोष ढूंढने के लिए प्रेरित हुई। मित्रों की बातें उसे खोखली लगी।

बिस्तर पर लगातार पड़े रहना और दवाईयों के असर से होने वाली बेहोशी ने उसे बेहद थका दिया। लोगों की आवाज और रोशनी उसे डराने लगी। वह हमेशा खिड़की दरवाजे बंद करने के लिए कहती थी। डाक्टर हैरिस ने कहा कि यह इस बात का लक्षण है कि वह ठीक हो रही है अर्थात् उसकी धमनियां काम करने में सक्षम हो रही है। लेकिन जोनी के लिए यह सब असहनीय था। बगल के कमरे की बातचीत भी उसे परेशान करती थी।

गरमी का एक दिन.......। जैकी, जोनी के लिए पंखा लेकर आ रही थी। पंखा उसके हाथ से बहुत आवाज के साथ नीचे गिर गया। जोनी को ऐसा लगा मानो आसमान गिर पड़ा हो। वह ऊपर से नीचे तक कांप गई।

"जैकी.......।"

जोनी चिल्लाई। क्षण भर के लिए वह विक्षिप्त सी हो गई। जितने शब्दों को जानती थी उनका इस्तेमाल करके वह शाप देने लगी। अश्लील शब्दों का इस्तेमाल करने में भी वह नहीं सकुचाई। लेकिन तुरंत ही उसे अपनी गलती का अहसास हुआ।

"जैकी, मुझे क्षमा करो।" वह रोने लगी। "मैंने जानबूझकर उन शब्दों का

प्रयोग नहीं किया है। तुम मुझे क्षमा करो। तुम मेरे सबसे निकट की सहेली हो। तुम मेरे लिए बहुत परिश्रम कर रही हो। मैं उसके लायक नहीं हूँ। फिर भी मैं तुम्हारे प्रति क्रोधित हुई। लेकिन जैकी, तुम मेरी हालत को समझो। मैं हर समय बिस्तर पर पड़ी रहती हूँ। मैं सब पर चिल्लाना चाहती हूँ। केवल इसलिये कि मेरे हृदय का दुख थोड़ा बाहर निकले। इस प्रकार मैं थोड़ा सांत्वना पाना चाहती हूँ। मैं जानती हूँ कि मेरी इस हालत के लिए कोई दोषी नहीं है। फिर भी मैं, मम्मी-पापा, डिक्की, परमेश्वर, सब पर चिल्लाना चाहती हूँ। लेकिन मम्मी पापा तो वैसे ही बहुत दुखी हैं। वे यह सह नहीं पाएंगे। और डिकी, मैं उन्हें खोना नहीं चाहती हूँ। वास्तव में मैं अभी इस डर में हूँ कि कहीं मैं उन्हें खो न दूँ। फिर भी अपने मन की कड़वाहट को किसके सामने उंडेलूँ? जैकी, मैं केवल तुम पर ही चिल्ला सकती हूँ। मुझे क्षमा करो, मैं वास्तव में क्रोध के कारण नहीं, दुख के कारण तुम पे चिल्लाती हूँ।"

जैकी ने मुस्कुराने का प्रयास किया। "कोई बात नहीं। मैं जानती हूँ कि तुम यह सब बातें गुस्से के कारण नहीं कह रही हो। वैसे भी मैं इतना भी नहीं कर पाऊं तो मित्रता का क्या अर्थ है?"

उस शाम को डिक आया। उसने नये नियम (जे. बी. फिलिप्स अनुवाद) भी लाया था। जोनी को पढ़ कर सुनाने के लिए.....। ज्यादा रूचि न होने के बावजूद भी वह सुनने के लिए तैयार हुई। केवल डिकी के खातिर...। वह तो केवल इतना चाहता था कि, जोनी इस दुख की घड़ी में परमेश्वर पर भरोसा रखे।

"हे मेरे भाईयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो धीरज नहीं खोना। घुसपैठ करने वाले शत्रुओं के समान उन्हें नजर अन्दाज भी नहीं करना, बल्कि सहायता के लिए पहुँचे मित्र के समान स्वागत करना है। ये आपके विश्वास को परख कर सामर्थी बनाने के लिए है।" डिक ने याकूब की पत्री से पढ़ना प्रारम्भ किया (1:2 - 4)।

एक अलग अनुवाद सुनने पर जोनी को उस वचन में कुछ रूचि उत्पन्न हुई। वह वचन उसे अपने जीवन के बहुत करीब लगी। किन्तु वह उसका पूर्ण अर्थ नहीं समझ पाई। "डिकी, इन वचनों का अर्थ क्या है?" उसने डिकी से पूछा।

"मुझे लगता है कि, हमें इसके शाब्दिक अर्थ को समझना चाहिए। अर्थात् तुम्हारे साथ हुई घटना एक दुर्घटना नहीं है। उसे हमें अनाधिकृत रूप से प्रवेश करने वाले एक शत्रु के रूप में नहीं देखना है। तुम्हारे विश्वास और धीरज को परखने के लिए, वे परमेश्वर द्वारा भेजे गये मित्र हैं। थोड़ा और स्पष्ट कहूँ तो तुम इस समय प्रशिक्षणशाला में हो। तुम एक खिलाड़ी रह चुकी हो। इसलिए इस बात को अच्छे से समझ सकती हो। खिलाड़ी को विजय पाने के लिए प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है। मुकाबला जितना कठिन होगा, प्रशिक्षण भी उतना ही कठिन होगा। किन्तु क्या तुम्हें यह बात अधिक सात्वना नहीं देती कि तुम ईश्वर की प्रशिक्षणशाला में हो।"

"आपकी बात सही हो सकती है, डिकी। लेकिन मैं इस प्रशिक्षण को पूरा करने में खुद को असमर्थ पाती हूँ। धीरज सीखने के बदले में शायद मैं ईश्वर का इन्कार ही न कर दूँ।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा, जोनी। देखो, हमारी परिस्थितियों के लिए आवश्यक सात्वनादायक वचन पवित्र शास्त्र में पाया जाता है। मैं आगे का हिस्सा भी पढ़ता हूँ।" डिक ने पढ़ना प्रारम्भ किया।

"…..किन्तु यदि कोई सोचता है कि इन परीक्षाओं का सामना करने के लिए उसके पास बुद्धि नहीं है, तो परमेश्वर उसे मूर्ख नहीं कहता। वह परमेश्वर से परीक्षाओं का सामना करने के लिए विनम्रता पूर्वक बुद्धि मांग सकता है।"

"हाँ डिकी…!" जोनी उत्साह से भर गयी। "मुझे यही चाहिये था। मैं नहीं जानती हूँ कि मुझे अपनी समस्या का सामना कैसे करना है? मेरे पास इसका

ज्ञान नहीं है।"

"हाँ जोनी, मैं भी यही कह रहा हूँ कि, हमारी समस्याओं का उत्तर हमें परमेश्वर के वचन से मिलता है। परमेश्वर का वचन बताएगा कि तुम इस हालत का सामना कैसे कर सकती हो।" डिक ने पुस्तक को बन्द करके रखा। अपने सिर को झुकाया। प्रभु हमें बुद्धि दो, ताकि हम इस समस्या का सामना कर सकें। आपके वचन के लिए और प्रतिज्ञा के लिए धन्यवाद।" प्रभु हमारी प्रार्थना सुन। उसने प्रार्थना किया।

जोनी ने भी प्रार्थना किया। यह विचार उसे बहुत सात्वाना दिया कि, उसके साथ हुई घटना उसके विश्वास को परखने के लिए आये हुए मित्र हैं। उसने बीमारी से छुटकारे के लिए प्रार्थना करना नहीं भूला। उसने दृढ़ विश्वास किया कि इस दुर्घटना के समान इससे मुक्ति पाना भी परमेश्वर की इच्छा है। मैं जानती हूँ कि यह दुर्घटना मेरी भलाई के लिए है। मैं विश्वास करती हूँ कि, मेरे चारों ओर के लोग मेरी चंगाई के द्वारा तुझमें विश्वास करेंगे। उसने प्रार्थना किया। उसके अगले दिनों में जोनी ने असाधारण साहस प्रगट किया। इलाज के लिए आने वाले डाक्टरों और नर्सों से उसने मसीह के प्रेम के बारे में बताया।

कई बार अपनी चंगाई के बारे में अपने अटल विश्वास का वर्णन करने में उसने अति उत्साह दिखाया। "परमेश्वर के वचन को सीखने के कारण मैं यीशु में ज्यादा विश्वास रखती हूँ। अपने पैरों से चल कर मैं घर जाउंगी। असम्भव लगने पर भी यह होगा। आप लोग यह देखेंगे।" सभी आगन्तुंकों के सामने जोनी अपने विश्वास की घोषणा करती।

जोनी की यह शुभ चिन्ता उसके हर काम में उस पर हावी रहती। एक दिन डॉक्टर हैरिस ने जब उसके पिता से कहा कि अस्पताल का बिल तीस हजार से ज्यादा हो जाएगा। तब जोनी का उत्तर था, "वह परमेश्वर देगा।"

किसी और दिन डॉक्टर शेरिल ने कहा, "जोनी तुम एक उर्जावान खिलाड़ी थी। इसलिए इन परिस्थितियों का सामना करने में तुम अन्य लोगों से अधिक मुश्किल अनुभव कर सकती हो।"

"मुझे विश्वास है कि परमेश्वर मेरी सहायता करेगा।" जोनी ने कहा।

किसी अवसर पर एक और नर्स उससे मिली। "मैंने तुम्हारा रिपोर्ट पढ़ा है।" उन्होंने कहा। "गर्दन की टूटन यदि एक इंच नीचे होता तो इतनी कठिनाई नहीं होती। कम से कम हाथों का प्रयोग कर सकती थी। तुम्हारे साथ बहुत बुरा हुआ है ना?"

"आप ने सही कहा है।" जोनी ने कहा। लेकिन यह टूटन एक इंच उपर होता तो मैं मर जाती। मेरे लिए उत्तम क्या है यह परमेश्वर जानता है।"

डिक ने जोनी के पढ़ने के लिए एक बड़े अक्षरों वाला स्टडी बाईबल लाकर दिया। जमीन पर उसे रखकर बिस्तर पर लेटे ही वह उसे पढ़ सकती थी। पन्नों को पलटने के लिए किसी की सहायता की आवश्यक्ता पड़ती। उस बाईबल के प्रथम पृष्ठ पर इस प्रकार लिखा हुआ था।

प्रिय जोनी,

हमारे संबंधो में हमेशा प्रभु की उपस्थिति हो। प्रभु हमें धीरज दे कि हम परस्पर एक दूसरे का इंतजार कर सकें।

सितंबर 9, 1976 प्रेम के साथ

रोमि. 8:28 डिक

3

सब कुछ वैसा नहीं चल रहा है जैसा हमने सोचा था। जोनी के साथ दुर्घटना हुए साढ़े तीन माह बीत चुके हैं। सिटी अस्पताल में इलाज के दौरान उसे बहुत कष्ट भोगना पड़ा। जैसा डॉक्टर ने कहा था उसी प्रकार उसके मन में बड़ा संघर्ष था। उसकी बड़ी आशा थी कि परमेश्वर उसे बड़ी अदभुत रीति से चंगा करेगा। किन्तु जैसे जैसे दिन बीतता जाता उसकी यह आशा क्षीण पड़ती जा रही थी। यह बात उसे मानसिक रूप से कमजोर करती रही। इस कमजोरी ने उसके शरीर को भी प्रभावित किया। फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि अब अधिक उम्मीद रखना बेकार है।

कार में ग्रीन ओक की यात्रा करते हुए उसने जय से कहा, ''यहां की हवा में कितना अन्तर है।

''हाँ, फैक्टरियों के कारण हवा भी प्रदूषित हो गई है।'' जय ने कहा।

"लेकिन मेरा यह मतलब नहीं था।" जोनी ने कहा। अस्पताल की उस उबासी भरे वातावरण की तुलना में यहाँ का वातावरण मुझे अच्छा लग रहा है। अभी अधिक अच्छा लग रहा है। शुद्ध हवा की ताजगी....।"

साढ़े तीन माह से उसने शुद्ध वायु में सांस नहीं ली थी। कारखानों के द्वारा प्रदूषित यह वायु भी अस्पताल की वायु से कहीं अधिक शुद्ध लग रही है। निश्चय ही अस्पतालों में भर्ती होने वाले कितने असहाय होते हैं। उन्हे शुद्ध हवा भी उपलब्ध नहीं होती है। जोनी को स्वयं पर दया आयी। दुर्घटना के एक हप्ता पहले उसने जो कपड़ा सिलवाया था, उस समय वह वही पहनी हुई थी। उसके कमजोर शरीर पर वह एक बोझ के समान दिखाई पड़ रहा था। उसके निर्जीव पैर एक तरफ की ओर झुके रहे।

"मम्मी, मुझे ओढ़ा दो।" उसने कहा।

"तुम्हे ठण्ड लग रही है?" उसकी मम्मी को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उस गरमी के मौसम में उसने ओढ़ाने के लिये कहा।

"नहीं, मुझे खुद पर घृणा आ रही है।"

"अरे नहीं बेटी, तुम्हें यूं ही लग रहा है। तुम अभी भी सुन्दर हो।" मम्मी ने उसे सात्वना देने के लिए कहा। साथ ही उन्होंने उसे एक चादर लेके ओढ़ा दिया।

ग्रीन ओक अस्पताल, सिटी अस्पताल की तुलना में एक बहुत भीड़ भाड़ वाला अस्पताल था। जोनी को अन्य चार लोगों के साथ डॉरमेट्री में रखा गया। सभी किसी न किसी दुर्घटना के शिकार हुए थे। उन में से बेट्टी जाक्सन नामक नीग्रो युवती ने उससे ज्यादा निकटता दिखाई। डॉरमेट्री के कोने पर "धूम्रपान मना है" का एक बड़ा पोस्टर लगा हुआ था। लेकिन विरोधाभास के रूप में उसी पोस्टर के ठीक नीचे ऑनविल्सन नामक युवती अपने बिस्तर पर लेटे धुएं के छल्ले उड़ा रही थी। उनके साथ साथ बेट्टी ग्लोवर, सेन्सी नामक युवतियां भी थी।

"पसन्द आया...?" सबसे मिलवाने के बाद बेट्टी जाक्सन ने पूछा।

"हूँ,.. शायद...।" वास्तव में सिगरेट फूँकने वाली उस लड़की को वह पसन्द नहीं कर रही थी। जोनी का मत था कि सिगरेट पीना एक निजी बात है और उसे अपने घर में ही पीना चाहिये। निश्चय ही सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान की अनुमति नहीं होनी चाहिये। वह उसकी धुआं और गन्ध को सह नहीं पाती थी। किन्तु क्या करें इस डॉरमेट्री के पांचवे हिस्से पर ही उसका अधिकार था। किन्तु कुछ मजाकिया लहजे में जोनी ने कहा, "आन, सिगरेट पीने से फेफड़ों में कैन्सर हो जाएगा। वह तुम्हें बहुत जल्द ही मार देगा।"

आन बहुत जोर से हँसी। वह अपनी हँसी को बहुत मुश्किल से रोक पायी। "जल्दी मार देगा....!! बहुत अच्छी बात है। इसलिए तो मैं इसे पी रही हूँ, ताकि मैं जल्दी मुक्ति पा लूँ....।"

आनविल्सन बहुत ज्यादा खतरनाक नहीं थी। धीरे धीरे जोनी को यह बात समझ में आ गयी। कई बातों में उसी के समान...। लगभग उसी के समान दुर्घटना की शिकार। उन सबसे बढ़ कर उसके पास कोई नहीं था जो उसे प्रेम करता हो। वह सब बातों के प्रति गुस्सा और विरक्ति प्रगट करती थी। सिगरेट पीना भी इसी को प्रगट करने का एक तरीका था।

ग्रीन ओक में सब उम्र के लोग और सब तरह के बीमार थे। विभिन्न जाति के और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग! गर्दन टूटे हुए लोग, पोलियो ग्रस्त लोग, शरीर की विभिन्न क्रियाओं में अस्थिरता प्राप्त लोग।

जोनी के समान गर्दन टूटे हुए कई लोग थे। अधिकतर लोग समुन्द्र स्नान के दौरान अपना गर्दन तुड़ा बैठे थे। तीन महीना सिटी अस्पताल में, फिर बाकी के दिन यहाँ पर।

"तुम्हें यहाँ आए हुए कितना समय हो गया है?" जोनी ने बेट्टी से पूछा।

“दो वर्ष...।” उसने इधर उधर देखते हुए उत्तर दिया।

“दो वर्ष !! ” उसे दिल पर हथौड़े की चोट जैसी लगी। दो वर्ष होने के बावजूद बेट्टी ठीक नहीं हुई? वह अब भी मेरे समान अपने लकवाग्रस्त शरीर को लेकर बिस्तर पर पड़ी है। इसका मतलब क्या यह है कि मुझे भी दो बर्ष तक इस तरह बिस्तर पर पड़े रहना पड़ेगा? दो साल के बाद क्या होगा? ठीक होने की कोई

जोनी के माता - पिता

ग्यारेन्टी तो नहीं है।

कुछ देर तक जोनी कुछ नहीं बोल पायी। कुछ देर बाद उसने हकलाते हुए पूछा, “बेट्टी क्या तुमने दो साल कहा है?”

“हाँ, दो वर्ष से मैं यहाँ हूँ। और ऐसा नहीं लगता कि बहुत जल्द यहाँ से छुटकारा मिलेगा। और तो और मैं यहाँ से जाना भी नहीं चाहती। यहाँ पर अपने समान लोगों के साथ रहना अच्छा है। यहाँ से बाहर गये तो लोग हमें सहानुभूति पूर्वक देखेंगे। वे सोचते हैं कि जिनका पैर लकवा मार जाता है उनका मस्तिष्क भी लकवा मार जाता है। लोग हमें एक मन्द बुद्धि के समान देखें, इससे अच्छा है, हम यहीं इस अस्पताल में रह जाएं।”

उस रात जोनी सो नहीं पायी। वह प्रार्थना करना चाहती थी पर नहीं कर सकी। “दो वर्ष…!” बेट्टी की आवाज उसके कानों में गूंजने लगी। “दो सालों में बेट्टी में कुछ खास परिवर्तन नहीं आया है। मेरी भी स्थिति इससे कुछ अलग नहीं है। शायद अनेक वर्ष यहाँ रहना पड़ेगा।” उसे रोना आया। सांत्वना पाने के लिए वह बाईबल के किसी पद को याद करने लगी। लेकिन उसके मन में कोई पद झांकने लिए भी नहीं आया।

अगले दिन डिक आया। एकान्त मिलने पर जोनी फट पड़ी। “डिक्की आप मुझे भूल जाओ। अब हम पुरानी जिन्दगी की ओर नहीं लौट सकते हैं।”

“लेकिन, जोनी तुम बहुत जल्द ही अच्छी हो जाओगी….हम एक साथ…।”

“नहीं ऐसा कभी नहीं होगा? मैं भी सोचती थी कि कभी ना कभी अपने पैरों का उपयोग कर सकूंगी और धीरे धीरे मैं अपने कॉलेज दिनों की ओर लौट जाउंगी। लेकिन मैं कभी भी ठीक नहीं हो पाउंगी। मैंने वह आशा छोड़ दी है। बीता हुआ दिन अब वापस नहीं लौटेगा। डिक्की आप अपना जीवन बरर्बाद मत करो। आप मुझे छोड़ दो।”

जोनी अपने चेहरे को हाथों में छिपा कर सिसकने लगी। डिक्की से कुछ कहते नहीं बन रहा था।

एक बार फिर वह अपनी जिन्दगी समाप्त करने का विचार करने लगी। “इस

पलंग रूपी कब्र में मैं एक लाश के समान हूँ। सिर के अलावा शरीर के सभी हिस्से निर्जीव हैं। एक लाश में और मुझ में क्या अन्तर है? मैं कभी चल पाउंगी इस बात की आशा खो चुकी हूँ। एक सामान्य जीवन की कल्पना मैं स्वप्न में भी नहीं कर सकती। विशेष करके डिक्की के साथ एक दाम्पत्य जीवन की। ऐसी अवस्था में दाम्पत्य जीवन के लिए प्रेरित करने का अधिकार किसको है?"

जोनी सचमुच में एक आश्चर्यकर्म की प्रतीक्षा कर रही थी। अच्छा होने के लिए नहीं, बल्कि जल्द मरने के लिए।

निराशा के कुछ दिन यूँ ही बीत गये। अप्रत्याशित रूप से और एक घटना हुई। क्रिसमस के दिन वह एक दिन के लिए घर की ओर जा रही थी। अस्पताल में भर्ती होने के बाद यह उसका पहला क्रिसमस था। अस्पताल के फिज़ियोथेरेपी के द्वारा वह पलंग पर टिक कर बैठने लायक हो गयी थी। एक ही तरह की स्थिति से थोड़ा अलग अवसर मिलने पर उसे बड़ी खुशी हुई थी। लेकिन इस यात्रा के दौरान सब कुछ गड़बड़ हो गया। उसकी रीढ़ की हड्डी के लिये यह घातक साबित हुई। अब सब कुछ आरम्भ से करना पड़ेगा।

ग्रीन ओक के फिज़ियोथेरेपी को बन्द करके जोनी को फिर से सिटी अस्पताल ले जाएंगे....रीढ़ की हड्डी के ऑपरेशन के लिए। इसके बिना फिज़ियोथेरेपी नहीं किया जा सकता। ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर साउथफील्ड ने उससे पूछा, "जोनी, तुम्हारा शरीर सुन्न होने के कारण तुम्हें दर्द महसूस नहीं होगा। हाँ रक्त वगैरह देखने से तुम्हें असुविधा होगी तो तुम्हें अनस्थेशिया दे दूंगा।"

"नहीं डॉक्टर, मुझे आपके अहसान की आवश्यक्ता नहीं है। पिछले वर्ष से मैं ये सब देख रही हूँ। अब ज्यादा कुछ देखने के लिए बचा नहीं है। जैसे भी आप चाहें काट पीट कर लें।" वह अपने क्रोध को दबाने का प्रयास करने लगी। वह सोचने लगी कि काश, वह अपने हाथों को ही हिला सकती। और किसी बात

के लिए नहीं केवल इसलिए कि वह अपने जीवन को समाप्त कर पाती। वह इतना अधिक निराश हो चुकी थी।

ऑपरेशन के कक्ष में डॉ. साउथफील्ड ने अपने हाथ में थामे चाकू से जोनी के रीढ़ की हड्डी के ऊपर का मांस काटकर अलग किया। चाकू पर से खून टपकते हुए उसने देखा। लेकिन शरीर में उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। दर्द रहित अवस्था में वह पहुंच चुकी थी।

शल्यक्रिया में सहायता करनेवाले डॉक्टर्स, डा. साउथफील्ड के हाथ में एक एक उपकरण देते रहे। एक एक उपकरण लेकर वे उसके शरीर में कुछ कुछ करते रहे। अन्त में उसने रीढ़ की हड्डी को चिकना करने की आवाज सुनी। वे अब कमर सीधा करने पर अधिक चोट नहीं पहुंचने के लिए उसके रीढ़ के हड्डी को छील कर सही कर रहे थे।

अपने अन्दर की कड़वाहट को वह दबाने का प्रयास करने लगी। वह उसे गीतों के रूप में बाहर निकालने लगी। उसमें निराशा के बोल थे। उसे उसमें आनन्द महसूस होने लगा। ऑपरेशन की उस तनाव से बचने के लिए वह ऑपरेशन टेबल पर लेट लेटे ही जोर जोर से निराशा के गीत गाने लगी।

"जोनी, कुछ आशा देनेवाली गीतें तुम्हारे पास नहीं है?" डॉक्टर ने पूछा।

"नहीं, मुझे कोई आशा नहीं है।" वह एक अजीब उन्माद के साथ गीत गाती रही।

ऑपरेशन के बाद जोनी पुनः ग्रीन ओक पहुंची। उसके घाव सूख चुके थे। अब सब कुछ नये सिरे से प्रारंभ करना होगा।

उसके नये फ़िज़ियोथेरेपिस्ट का नाम ऐल था। जोनी को ऐसा पलंग दिया गया था जिस पर वह टिक कर बैठ सकती थी। एक लीवर को घुमाने से उसके

पलंग का सिरहाना ऊपर उठ जाता था और वह टिक कर बैठ सकती थी।

"देखो जानी, हम सब कुछ पुनः प्रारंभ कर रहे हैं।" ऐल ने कहा। "तुम लेटे लेटे परेशान हो गयी होगी, अब कुछ देर बैठने का प्रयास करो। धीरे धीरे पलंग को उठाने का प्रयास करो... हां...अब कैसा लग रहा है?"

"बहुत बढ़िया, इन सब के लिए ही तो मैं ने ऑपरेशन की सारी परेशानियों को झेला है। ऐल, अब कैसा है? मैं सही कर रही हूं ना?"

उन्होंने कुछ नहीं कहा। पलंग से उठाकर पुनः उसे स्ट्रेचर में लिटा दिया।

"क्या हुआ ऐल? मुझे पलंग में क्यों नहीं बैठा रहे हैं? मुझे पलंग पे बैठाओ।" जोनी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

"माफ करना जोनी, तुम पलंग पर बैठने योग्य नहीं हुई हो। बहुत दुख की बात है। तुम्हारा शरीर फिज़ियाथेरेपी के अनुकूल नहीं हो रहा है। जहां ऑपरेशन हुआ है वहां से अभी भी रक्त निकल रहा है। हम नहीं कह सकते कि ऑपरेशन सफल रहा।"

जोनी अधिक नहीं सुन सकी। उसकी उम्मीदें एक एक करके खत्म हो रही है।

उस हप्ते डिक पुनः आया। वह स्ट्रेचर पर जोनी को लेकर बरामदे में पहुंचा। वह जोनी के सामने नीचे बैठ गया। रीढ़ की हड्डी के ऑपरेशन के बाद से जोनी को पेट के बल लिटाया जाता था। उससे बात करने का सबसे अच्छा तरीका था उसके सिर के पास नीचे जमीन पर बैठ जाना।

उनकी बातचीत में पिछले दिनों की तुलना में एक नये रिश्ते की छाया थी। भविष्य में पति-पत्नी के रिश्ते में बन्धने वाले लोग जैसी भावना से वे दूर हो चुके थे। दोनों ने ऐसा कुछ नहीं कहा लेकिन उनके मन के भाव ऐसे थे। उस दिन डिक

ने बाईबल से कुछ पद उसे पढ़के सुनाया। विश्वास, आशा और भरोसा को सूचित करनेवाले पद। लेकिन जोनी ने सब कुछ ठुकरा दिया। "ये सब दोनों पैर वाले साधारण मनुष्यों द्वारा साधारणतया सामना करनेवाली समस्याओं से निजात दिलाने के लिए ठीक है। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए जो बिना किसी आशा के स्ट्रेचर पर पेट के बल लेटी हुई लाश के समान है, ये बातें बेमानी है।

ये बहुत सस्ती बातें हैं, डिकी। परमेश्वर के वचन के प्रति उसने अपने मुख को फेर लिया। उसका बहुत उथला सा अर्थ है। मुझे लगता है मेरी सारी प्रार्थनाएं किसी अंधे कुएं में जाकर गिर रही है। बाईबल के इन पदों को मेरे जीवन से क्यों संबंधित करते हो? आप कहते हो कि सब कुछ मेरी भलाई के लिए है। पिछले एक साल बीत गये मेरे जीवन में कौन सी भलाई आई? एक एक दिन बीतने पर मेरी परेशानियां बढ़ती ही रहीं। उसके अलावा और कुछ नहीं हो रहा है। एक मुश्किल समाप्त होने पर दूसरी मुश्किल आ जाती है। सीधे लेटने का अधिकार भी मुझे नहीं है..........। मुझे कुछ नहीं सुनना है।"

फिज़ियोथेरेपी विशेषज्ञ क्रिस ब्राउन जोनी के पास आकर बहुत देर तक बातें करती रही। उनकी बातचीत एक बहुत अच्छे मित्र के समान थी। मानों उसकी भावनाओं को जानकर क्रिस ने जोनी से कहा। "जोनी, सामान्य लोग हाथ से जो काम करते हैं उसे तुम अपने मुहं से कर सकती हो। मैं ने बहुत से लोगों को दांतो से पेंसिल पकड़ कर लिखना और टाईप करना सिखाया है। क्यों नहीं तुम भी ऐसा प्रयास करती हो?

"नहीं...", जोनी चीख पड़ी। जोनी की प्रतिक्रिया अप्रत्याशित थी। "यह बहुत शर्मनाक काम है। यह मनुष्य का अपमान करना है। मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी।"

क्रिस ब्राउन ने इस प्रकार की किसी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी। थोड़ी बहुत अनिच्छा जैसी बात की उन्होने उम्मीद की थी। "ठीक है, किसी और दिन

इस बारे में बात करेंगे” कहकर वह वहां से चल दी।

उन दिनों ग्रीनओक में जोनी ने जिम पोलार्ड नामक युवक को देखा जो उसी के समान दुर्घटना का शिकार हुआ था। उसकी हालत बहुत दयनीय थी। सिर को स्थिर रखनेवाली मांसपेशियों के निष्क्रिय हो जाने के कारण उसका सिर एक तरफ की ओर गिरा हुआ था। जोनी तो कम से कम अपना सिर अपनी इच्छा के अनुसार हिला सकती थी।

सिर को स्थिर रखने में सक्षम न होने के बावजूद जिम बुद्धि में बहुत आगे था। शरीर के लकवाग्रस्त होने के बावजूद उसका मन, उसकी सोच और तो और उसकी आवाज बहुत सामर्थी थी। शायद एक समान दुख भोगने के कारण वे दोनों बहुत जल्दी निकट आ गये। बहुत से विषयों पर बात करने का अवसर उन्हें मिला। विशेषकर धर्म संबंधी विषयों पर। एक बार जोनी ने उससे पूछा। “यदि परमेश्वर व्यक्तिगत रीति से मेरी चिन्ता नहीं करता है तो फिर मुझे एक परमेश्वर की क्या आवश्यक्ता है?”

“यहीं पर तो सारी समस्या है।” जिम उसकी ओर मुखातिब हुआ। “मैं धर्म, तत्वज्ञान सबको परख चुका हूं। मैं ने यह पाया है कि जीवन का कोई अर्थ नहीं है। वह लक्ष्य रहित और अर्थ शून्य है। ”

“तब फिर हम क्यों इस बारे में सोचें? क्यों न हम आत्महत्या कर लें? हमारी बात छोड़ो। हम तो स्वयं आत्महत्या भी नहीं कर सकते। मेरा कहना है यदि जीवन का कोई अर्थ नहीं तो सारी मानवजाति एक साथ मर क्यों नहीं जाती...?”

“हाँ, हम चाहें तो जीवन का अर्थ बना सकते हैं.....। नहीं तो ऐसा विचार पैदा कर सकते हैं मानो जीवन का कोई अर्थ हो। उदाहरण के लिए, कुछ लोग ईश्वर पर विश्वास करते हैं। इस प्रकार वे सोचते हैं कि जीवन का कोई अर्थ है। या फिर ऐसा सोचकर स्वयं सात्वना पाते हैं। लेकिन तुम तो जानती हो हम जैसे

जोनी डायना और बेट्सि

लोगों के लिए धर्म एक बड़े शून्य से बढ़कर कुछ नहीं है।"

"वह सब जाने दो। जिम, क्या सोचते हो? क्या जिन्दगी का कुछ अर्थ है?"

"बहुत संभव है कि दो पैर में खड़ा होने योग्य व्यक्ति जीवन में बहुत कुछ कर सकता है। वह कुछ खा सकता है... काम कर सकता है... परस्पर प्रेम कर सकता है... सब कुछ भोग सकता है...। इन बातों में वे आनंद प्राप्त करते हैं। उनके लिए जिन्दगी का अर्थ है। लेकिन अपने संबंध में यह एकदम अलग बात है। तुम्हारे पास करने के लिए कुछ नहीं है। और हमारे निष्क्रिय जीवन का कुछ अर्थ नहीं होता है।"

"अगर ऐसी बात है तो, फिर तुम क्यों जी रहे हो, जिम? तुम तो कुछ खास नहीं कर सकते हो।"

"यह सही है कि मेरे पास करने को कुछ खास काम नहीं है। अपने शरीर

में मैं बहुत कुछ कर नहीं सकता हूं, यह सही है। लेकिन मैं एक मन्द बुद्धि नहीं हूं। मेरा मन क्रियाशील है। प्रत्येक नई जानकारी और विचार के द्वारा मैं अपनी बुद्धि को पोषित करता हूं। मेरे मन का विकास मुझे उत्तेजित करता है। दूसरे शब्दों में कहूं तो, जब साधारण लोग शरीर सुख की खोज करके जिन्दगी को धन्य बनाने का प्रयास करते हैं। तब मैं अपनी बुद्धि को पोषित करके जीवन का अर्थ ढूंढता हूं।"

"लेकिन जिम, तुम जिन्दगी के विषय में इस रीति से सोचते हो। जिन्दगी के प्रति तुम्हारे मन में कुछ धारणा है। लेकिन जिन्दगी के प्रति जो लोग ऐसा विचार नहीं रखते हैं उनका क्या हाल है? साधारण लोगों की ही बात लें। जिन्दगी में कितने लोग अपने कार्य का अर्थ ढूंढते हैं? तुमने कहा कि प्रत्येक नई बात तुम्हें उत्तेजित करती है। लेकिन अन्य लोग प्रत्येक नया काम करते समय कितना आनंद प्राप्त करते हैं?"

"एक सामान्य व्यक्ति के लिए खाना खाना, काम करना, प्रेम करना आदि उसकी दिनचर्या का भाग है। वह उनके मन को छूता या उत्तेजित करता नहीं है। जीना है, इस लक्ष्य के अलावा अधिकांश लोगों की जिन्दगी का कोई लक्ष्य नहीं होता है।"

"जहां मैं तुम्हें पहुंचाना चाहता था, वहां तुम पहुंच गयी हो। जिम का चेहरा खिल उठा। संसार के कुछ सुपर बुद्धिजीवियों से मैं तुम्हें परिचित कराता हूं। सार्त्र, मार्क्स जैसे दार्शनिकों की पुस्तकें।"

अगले कुछ दिन जोनी जिम द्वारा दी गई कुछ पुस्तकें पढ़ती रही। सार्त्र का, नोसिया, काफका का 'दी ट्रायल' जैसे नोवेल और कुछ अन्य दार्शनिक पुस्तक वह पढ़ती रही। सक्षम मित्र पन्ने पलटाने में उसकी सहायता करते थे।

लेकिन एक एक किताब पढ़ने के बाद जोनी और असुविधा महसूस करने

लगी। प्रत्येक पुस्तक मे उसने एक अर्थ शून्य जीवन को देखा। एक ऐसा जीवन जिसका कोई शाश्वत लक्ष्य नहीं है। परमेश्वर रहित जीवन निश्चय ही निराशा की ओर ले जाता है।

लोगों की नजर में एक वस्तु के समान दिखना कितनी दयनीय स्थिति है। नोसिया के कथापात्र उसे शून्यता से आश्लेषित करने लगे। काफ़का की कहानियां उसे व्याकुलता की ओर ले जाने लगी। भय विह्वल होकर वह जीवन रूपी अबूझ पहली के सामने चकित खड़ी रही।

प्रत्येक मुलाकात में जिम उसे उपदेश देता था। "देखो जोनी, किसी भी बात में कोई अर्थ नहीं है। जिस प्रकार जीवन क्षणिक है, उसी प्रकार चंचल भी है। हर चीज का तात्कालिक....। इसलिए अभी उसका उपभोग कर लेना है। नौकरी, मित्रगण, परिवार, सफलता सब कुछ क्षण भर के लिए है। उसका उपभोग करो। यह उम्मीद छोड़ दो कि इस जीवन के बाद और कुछ मिलेगा। मेरी ही बात लो। मैं इसी क्षण के लिए जीता हूं। इस क्षण के लिए जीने के कारण मैं व्याकुल नहीं होता हूं।"

"लेकिन जिम, मेरी सोच इससे थोड़ी अलग है। कॉलेज के दिनो में ही मैंने इन सब क्षणिक सुखों को परख कर जाना है। मैंने उनमें कोई आनंद नहीं पाया है। एक क्षण का सुख कई बार कई दिनों के दुख के अग्रदूत के रूप में आता है। इसलिए आनेवाले दुख का ज्ञान वर्तमान समय के क्षणिक सुख को भी नाश कर देता है। मुझे लगता है कि हमें कुछ स्थायी चाहिए। वही हमें आनंद दे सकता है।"

"लेकिन स्थायी चीजों को खोजने से तुम्हे क्या मिला? केवल इस दुर्घटना को छोड़ कर। यह स्थायी रहेगा। तुम कहा करती हो कि बाईबल के अनुसार तुम्हारे लकवाग्रस्त होने में भी परमेश्वर की भलाई छिपी हुई है। तुम ही बताओ, तुम्हें लकवाग्रस्त करने के पीछे परमेश्वर का क्या उद्देश्य है? यह कैसी भलाई है?"

“वह ... वह तो मैं नहीं जानती जिम। इसलिए तो मेरे अंदर इतना संदेह है।”

“संदेह की आवश्यक्ता नहीं है। परमेश्वर जैसी अवधारणा रखना ही मूर्खता है।”

“मैं यहां तक नहीं पहुंची हूं, जिम। मैंने तुम्हारी दी हुई किताबें पढ़ी है। तुम्हारी बातों को साबित करने का तर्क भी उसमें है। लेकिन....।”

“लेकिन क्या? तुम डर रही हो। ऊपर कहीं विराजमान परमेश्वर कल आकर तुमसे हिसाब लेगा,... तुम्हें दण्ड देगा। अगर ऐसा कोई परमेश्वर है तो वह मझे क्या कर सकता है? अब तक जो हुआ उससे बढ़कर और क्या हो सकता है। मैं ऐसा सोचता हूं।”

“मैं विकलांग हूं। अब कभी चल नहीं पाउंगा। यह व्यक्ति जिसे हम परमेश्वर कहते हैं उस पर विश्वास न करने के कारण वह क्या करेगा? क्या वह मुझे पकड़ कर नरक में डाल देगा? इससे बड़ा नरक और कहां पर है? मैं तो अभी से नरक में हूं....। नहीं जोनी, कोई परमेश्वर नहीं है।”

जिम की आवाज में कम्पन थी। उसकी आंखे भर आई थी। जोनी को लगा कि उसकी यह कमजोर बातें उसकी बुद्धि की शिखर से नहीं बल्कि निराशा की गहरी खाई से है। मानो अपने अविश्वास को दृढ़ करने के लिए फिर से उसने कहा। “नहीं ! कोई परमेश्वर नहीं है।” उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि उसकी यह बातें खुद को विश्वास दिलाने के लिए है।

डॉरमेट्री में जोनी असहज स्थिति में पड़ी रही। क्या सही है? यदि परमेश्वर नहीं तो जिन्दगी का कोई अर्थ नहीं है। यदि परमेश्वर है तो इस पुराने दावे को तिनके का सहारा बनाये जा सकता है। यह उम्मीद कि सब कुछ के द्वारा भलाई ही होगा। चाहे कुछ भी कहो यह बात सांत्वना अवश्य देती है।

लेकिन जो बात शाश्वत नहीं है उसमें हम कैसे उम्मीद रख सकते हैं। कम से

कम इतना जान लेती कि ईश्वर है तो थोड़ी सांत्वना मिलती। लेकिन वह भी नहीं हो पा रहा है।

दर्शन, तत्वज्ञान, तर्कशास्त्र इन सब ने जोनी के विचारों को उथल पुथल कर दिया। क्या मैं शरीर के समान मन को भी खो रही हूं? उसे लगा कि यह सब चलता रहे तो वह पागल हो जाएगी।

अत्यधिक व्याकुल होकर उसने अपने आंखों को बन्द किया। मन की खिड़कियों को बन्द कर दिया। व्याकुलता धीरे धीरे कम होने लगी। .... कहीं से ठण्डी बयार सी शांति आई। नवीनता की एक सुखानुभूति।

उसके विचलित हृदय में कहीं से एक धीमी आवाज सुनाई दिया। "जितनों ने उसकी ओर देखा उनका मुहं कभी काला नहीं होने पाया।"

जोनी शांति से नींद के आगोश में पहुंच गई थी।

4

जिम ने जोनी को जो पुस्तक दी थी वह जीने की अंतिम आशा को भी बुझा देने वाली थी। उन पुस्तकों ने उसे बहुत अधिक निराश किया। जब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि उन पुस्तकों से उसे अधिक लाभ नहीं होने वाला तो वह पुनः बाईबल की शरण में आ गई।

'तेरे विचार और मेरे विचार में भारी अंतर है। तेरी गति और मेरी गति में बहुत अंतर है।' उसे लगा कि परमेश्वर उससे बात कर रहा है। लेकिन वह उसका भेद नहीं समझ सकी। ग्रीन ओक में उसकी सबसे प्रिय सहेली स्कूली दिनों से उसके साथ पढ़ने वाली डायना थी। जैकी अपनी पढ़ाई संबंधी व्यस्तता के कारण समय नहीं निकाल पाई। किन्तु डायना अपने एक सत्र के अध्ययन को स्थगित करके जोनी की सेवा करने के लिए अस्पताल आ गई।

जोनी ने डायना के साथ अपने विचारों को बांटा। "यह सही है कि अभी मैं

परमेश्वर पर ज्यादा भरोसा रख पा रही हूं। लेकिन डायना, मेरा एक अनुत्तरित प्रश्न अभी भी यह है कि परमेश्वर ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? क्यों उसने यह दुर्घटना होने दिया? काश कि मैं परमेश्वर की इच्छा को जान पाती।"

"उसे जान लेने से क्या फर्क पड़ता, जोनी?" डायना ने प्रति प्रश्न किया। "देखो जोनी, इतना तो निश्चित है कि इसके पीछे परमेश्वर का उद्देश्य है। यदि तुम परमेश्वर पर भरोसा रखती हो तो फिर यह सोचकर क्यों व्याकुल होती हो? जिस प्रकार एक पिता अपने नन्हे बच्चे की चिन्ता करता है उसी प्रकार वह तुम्हारी भी करता है। वह कभी भी तुम्हारी हानि नहीं करेगा।"

"तब फिर तुम्हारे विचार से मुझे क्या करना चाहिए?"

"तुम अभी जो कुछ कर रही हो वही करती रहो। तुमने ओकुपेशनल थेरेपिस्ट को डांटकर भगा दिया।....यह कहकर कि मुंह में पेंसिल पकड़कर चित्र रचना करना तुम्हारे आत्मसम्मान के खिलाफ है। जब परमेश्वर ही अंतिम विधाता है तो फिर हम इन बातों की खिलाफत क्यों करें। लेकिन मैं सोचती हूं कि परमेश्वर तुम्हारे इस लकवाग्रस्त जीवन से भी अवश्य कुछ न कुछ उद्देश्य रखता होगा।"

"लेकिन मेरा तो यही विश्वास है कि मेरे हाथ पुनः कार्य करने लगेंगे। फिर मैं क्यों मुंह से ये सब कार्य करूं।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है। यदि तुम्हारे हाथों में पुनः ताकत आ जाए। लेकिन यदि न आए तो.....?"

जोनी स्तब्ध रह गई। उसने ऐसी किसी संभावना के बारे में सोचा भी नहीं था। बल्कि यह कहना और भी सच होगा कि वह किसी ऐसी बात के लिए तैयार भी नहीं थी। उसे पूरा भरोसा था कि परमेश्वर उसे स्वस्थ करेगा। पैर यदि ठीक भी न हो पाएं तो कम से कम हाथ काम करने लगेंगे। इंतजार करने के लिए वह तैयार थी। 'एक वर्ष...दो वर्ष...पूरे जीवन भर मैं व्हील चेयर में रहने के लिए

तैयार हूं। बस...मेरे हाथ काम करने लग जाएं। परमेश्वर क्या आप मुझे मेरे हाथ वापस नहीं करेंगे।" वह सिसकने लगी।

"जोनी..."

"हुं..."

अभी हमें भविष्य के प्रति सोच सोच कर व्याकुल नहीं होना है। एक एक

कदम हम आगे बढ़ेंगे। सब कुछ हम परमेश्वर में समर्पित करें।

अगले दिन वह ओकुपेशनल थेरेपिस्ट क्रिस ब्रौन से मिल कर कुछ न कुछ क्रियात्मक कार्य करने की इच्छा प्रगट की। इस बात से उन्हे भी बड़ी खुशी हुई। वास्तव में वह भी यह सोचकर परेशान थी कि किस प्रकार पुनः जोनी को ओकुपेशनल थेरेपी के लिए तैयार किया जाए। किन्तु अभी जोनी स्वयं उनके पास आई है।

"जोनी, मेरा काम तुम्हे तैयार करके संसार में भेजना है....। तुम भी इस दुनिया का और यहां की जनता का एक हिस्सा हो। तुम्हे भी वहां बहुत कुछ करना है। इसीलिए तुम्हे यह प्रशिक्षण आवश्यक है....।"

"आप सबसे पहले क्या करने जा रहीं हैं?" जोनी ने पूछा।

"मैं कुछ नहीं करने जा रही हूँ। सब कुछ तुम्हे ही करना है। सबसे पहले क्यों न हम लिखना सीखें।"

"ओके....।" जोनी ने अपनी सहमति जताई।

क्रिस ने एक विशेष प्रकार का पेंसिल लेकर उसके मुंह में फिट किया। उसने उसे मजबूती के साथ दांतों के बीच में दबा लिया।

"इतना जोर से दबाकर उसे तोड़ मत देना...।" क्रिस ने मजाक भरे लहजे में कहा। "बस....नीचे नहीं गिरना चाहिए। उसे दांतों से नियंत्रित करना सीखना है। वरना तुम्हारी ठुड्डी की हड्डी में गठान पड़ जाएगी।"

प्रारंभ में मुंह में दबाकर लिखना बहुत मुश्किल काम था। धीरे धीरे अक्षरों ने आकार लेना प्रारंभ किया। वह बिस्तर पर लेटे लेटे ही यह सब कुछ कर रही थी। धीरे धीरे अक्षरों को सीखने के बाद उसने अपने माता पिता को एक पत्र लिखा।

जोनी को ओकुपेशनल थेरेपी में बहुत मजा आ रहा था। उसमें जिंदगी के प्रति एक सकारात्मक सोच पैदा हुई। निराशा भरे उबाऊ दिन अब बीत गए थे। क्रिस, डायना और अन्य मित्रों ने उसे बहुत प्रोत्साहित किया।

सितंबर माह में जोनी को एक और शल्यक्रिया के लिए दूसरे अस्पताल में ले जाया गया। सिटी अस्पताल में हुए प्रथम आपरेशन की असफलता के कारण पुनः एक आपरेशन की आवश्यक्ता आन पड़ी थी। वह अब भी फिज़ियोथेरेपी करने लायक नहीं हुई थी। यह नया अस्पताल जोनी के घर से मुश्किल से एक मील की दूरी पर था। घर के पास कुछ दिन व्यतीत करना उसके लिए आनंद की बात थी। लेकिन यह सोचकर उसे दुःख भी था कि आपरेशन के बाद उसे वापस ग्रीन ओक अस्पताल जाना है।

इस नये अस्पताल में इलाज के आधुनिक तरीकों का उपयोग किया जाता था। अस्पताल के कर्मचारीगण बहुत सहानुभूतिपूर्वक और विनम्रता के साथ व्यवहार करते थे। उसे बड़ी खुशी हुई।

आपरेशन सफल रहा। पिछली बार की तरह उसने निराशा के गीत नहीं गाया। उसने शांति के साथ सारी बातों का सामना किया।

पुनः बिस्तर पर मुंह जमीन की ओर करके लेटना.....। दस पंद्रह दिन इसी प्रकार निकल गये। लेकिन इस बार उसने जिम द्वारा दी गई पुस्तकों को पढ़ने के लिए नहीं चुना। इस बार उसका चुनाव मसीही पुस्तकें थीं। सी.एस. लुईस की 'वास्तविक मसीहियत' नामक पुस्तक उसने पढ़ने के लिए चुना। इस पुस्तक ने उसे बहुत अधिक प्रभावित किया। घर के पास होने के कारण बहुत से लोग उसे देखने आते थे। मम्मी, पापा, डायना, डिक.....। पंद्रह दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला।

बहुत जल्द जोनी, ग्रीन ओक वापस पहुंची। वहां भी परिस्थितियां बदल चुकी

थी। आपरेशन सफल रहने के कारण उसे एक व्हील चेयर इस्तेमाल करने की अनुमति मिली। उसे तो मानो सारे जहां की खुशी मिल गई थी। डेढ़ साल बिस्तर पर रहने के बाद थोड़ा बदलाव....। उसे फिज़ियोथेरेपी करने के अधिक अवसर मिले। इस बात ने भी उसे बहुत खुशी दी।

उसकी खुशी का एक और कारण था मरीजों का वहां से अच्छा होकर जाना। जोनी के कुछ मित्र इलाज पूरा कर वापस चले गए थे। इस बात ने जोनी को भी उम्मीद दिया। कभी न कभी मैं भी अस्पताल से घर जा सकूंगी।

एक दिन क्रिस ब्रौन ने उससे कहा। "अब तुमने लिखना सीख लिया है। अब तुम हाथ से लिखने वालों से भी अच्छा लिख लेती हो। क्यों न अब तुम चित्र रचना की ओर ध्यान दो। वैसे भी तुम चित्रकारी करती भी थी।

"लेकिन उस समय मेरे पास हाथ थे।"

"यह कोई खास बात नहीं है। कला हाथों में नहीं मन और हृदय में होता है। हाथ तो माध्यम मात्र है। जिसके पास कला है उसे हाथों की आवश्यक्ता नहीं है। " क्रिस ने उसे प्रोत्साहित किया।

जोनी ने क्रिस की सलाह को मानने का निर्णय लिया। उसने मन में एक दृश्य की कल्पना की। सामने दीवाल पर चिपके कैनवास पर उसने अपनी कल्पना को उकेरना प्रारंभ किया। पहाड़, नदी, पेड़, घाटी, ...धीरे धीरे कैनवास पर चित्र उभरने लगे। अंत में कैनवास पर पहाड़ और घाटियों की पृष्ठभूमि में तीव्र गति से आ रहा एक घुड़सवार प्रगट हुआ। जोनी ने आश्चर्य के साथ अपने बनाये चित्र की ओर देखा। जोनी को विश्वास नहीं हुआ कि यह उसी की कृति है।

"जोनी, तुम्हे चित्रकारी को ही अपनी जीवनचर्या के रूप में चुनना चाहिए।" आश्चर्य के साथ चित्र की ओर देखते हुए क्रिस ने कहा। जोनी के बनाये चित्र

को देखकर क्रिस को सुखद आश्चर्य हो रहा था।

"लेकिन मेरे हाथ.....?"

"जोनी, मैंने कहा न.....। कला हाथों में नहीं दिल में होती है।' "

बाद के दिनों में जोनी कला को ही पूजा मान कर चित्र बनाती रही। इस दौरान वह आत्मिक रूप से भी बढ़ती रही। उसके मन का बैरभाव बुझ गया। उसने अपने पिछले दिनों का विश्लेषण किया। जैसा कि जिम ने कहा था, उन दिनों में उसके पास विशेष रूप से कुछ करने के लिए नहीं था। खाना, पीना, सोते रहना....बस। इसके अलावा उसके पास करने को कुछ नहीं था। उसका जीवन एक लक्ष्य रहित जीवन था। अच्छे से अच्छे स्वस्थ व्यक्ति के पास भी यदि करने के लिए कुछ न हो तो वह लक्ष्यरहित जीवन व्यतीत करने लगता है।

मसीही पुस्तकों ने उसे कार्ल मार्कस्, कामु जैसे नास्तिकतावादी पुस्तकों से मुक्ति दिलाई। उसे ऐसा लगा मानो धुंए की गर्द से बाहर निकलकर शुद्ध वायु में सांस ले रही हो। फ्रांसिस शेफर, सी.एस. लुइस जैसे लेखकों की पुस्तकें उसे परमेश्वर के वचन की गहराईयों में ले गई।

एक रात उसे एक विशेष अनुभव हुआ। वह पिछले डेढ़ वर्ष में भोगी हुई यातनाओं के बारे में सोचने लगी। कैसी कैसी यातनाएं.....मानसिक पीड़ा....शारीरिक पीड़ा.....अकेलेपन का अनुभव...। अब भी पीड़ा कुछ कम नहीं है।

उसे रोने की इच्छा हुई। लेकिन यदि मैं रोउंगी तो मेरा नाक भर आयेगा। मैं अपनी नाक कैसे पोछूंगी...? कौन मेरे आंसुओं को पोछेगा?

रात्रि की गहन नीरवता में अपने पलंग के समीप उसने यीशु का दर्शन किया। यीशु की गंभीर आवाज उसके कानों में गूंजने लगी। "जोनी, तू क्यों खेदित है?

मैं सदा तक तुम्हारे साथ हूं। मैंने तुम से इतना प्रेम किया कि तुम्हारे लिए अपना प्राण दिया। फिर मैं तुम्हे इस अवस्था में छोड़ कैसे दूंगा? क्या तुम सोचती हो मैं तुम्हारी स्थिति से अन्जान हूं?"

कुछ समय के लिए जोनी को बड़ा आश्चर्य हुआ। "क्या यीशु मेरी इस अवस्था को जानता है? वह कब ऐसी परिस्थिति से गुजरा? सहसा उसे स्मरण हो आया।.....क्रूस पर.... हां, क्रूस पर ही तो वह ऐसी अवस्था में पड़ा रहा। असहाय...प्यासा...मृत्यु का इंतजार करता हुआ। यीशु के लिए मेरी अवस्था अपरिचित नहीं है।"

यीशु के साथ साक्षात्कार उसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया। दुर्घटना से पहले उसने कभी भी यीशु की आवश्यकता महसूस नहीं की थी। लेकिन इस घटना के बाद से उसके जीवन में गहरा परिवर्तन आ गया। उसके दुःख और मानसिक व्यथा के स्थान पर आशा ने घर कर लिया। वह प्रसन्न रहने लगी।

जोनी की बहन जय जो अपने दांपत्य संबंध में दरार की पीड़ा झेल रही थी, के लिए भी जोनी का नया अनुभव नई आशा का संचार करने वाला था। इस प्रकार जोनी ने न केवल आशा पाई बल्कि आशा देने वाली भी बनी।

५

जोनी की प्रथम विमान यात्रा। उसके गृहनगर से 3018 मील। यह एक उम्मीद की यात्रा भी थी। बाल्टिमोर की कड़क ठंड को पीछे छोड़कर लॉस एंजिलस की गर्मी में वे पहुंचे।

अस्पताल में रहने आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कर उसके मम्मी पापा बाल्टिमोर लौट गये। जय और उसका बेटा केय उसकी सेवा करने के लिए लॉस एंजिल्स में ही रह गये। उनके रहने के लिए अस्पताल के पास एक छोटा सा कमरा किराये पर लिया गया था।

लगभग एक सप्ताह बाद अस्पताल के बरामदे में कुछ चिर परिचित आवाज सुनकर वह दरवाजे की ओर देखी। उसे आश्चर्य में डालते हुए डायना, डिक्की, और जैकी ने कमरे में प्रवेश किया। यह एक अप्रतीक्षित घटना थी। ला... ला... ला... गीत गाते हुए डायना जोनी के गले से लिपट पड़ी।

"अरे....मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।" आनंदातिरेक में जोनी ने कहा।

"हूं.....। बस हम चले आये।" डिक पास आकर अपने हाथों में जोनी के हाथ को लिया।

"खुश....?" जैकी ने पूछा।

"ओह.....। तुम लोग यहां कैसे पहुंच गये।" जोनी को तब भी विश्वास नहीं हो रहा था।

"यह दूरी हमने बदल बदल कर गाड़ी चला कर तय किया है।" डायना ने कहा।

"बिना रूके...। तभी तो हमारे कपड़े इतने मैले हैं।" डिक ने कहा।

"हाँ.... ।" बहुत दिनों के बाद मिलने के आनंद में जैकी ने उसके चेहरे से नजर नहीं हटायी। "नेवेड़ा में पेट्रोल भरने के लिए एक बार कार रोकी थी। उसके बाद यहां आकर हमने इंजन ऑफ किया है। मुलाकात का समय समाप्त होने से पहले हम यहां पहुंचना चाहते थे।"

"अंतिम पचास मील तो कार हवा से बातें कर रही थी। लगता था कि हम कार में नहीं हवाई जहाज में बैठे हैं।"

"तुम लोग असाधारण हो....।" जोनी अपनी खुशी को रोक नहीं पा रही थी।

अस्पताल का कोई कर्मचारी मुलाकातियों को बाहर निकालने नहीं आया। देर रात तक वे हालचाल पूछते रहे। उनके ठहाके वहां गूंजते रहे।

जय उन्हें अपने किराये के कमरे में ले गई। वे कुछ दिन लॉस एंजिलस में रूकने की तैयारी से आये थे। इस बात ने जोनी को एक उत्साह दिया।

रान्झो में जोनी का नया डॉक्टर एक सरल और नये तरीके सीखा हुआ

जोनी अपनी कर्मभूमि में

युवक था।

"कल मेरे दोस्तों ने जब मेरे कमरे में हल्ला मचाया तब आपने उन्हें नहीं भगाया, इसके लिए मैं बहुत धन्यवादी हूं डॉक्टर।" अगले दिन डॉक्टर के आने पर जोनी ने उनसे कहा।

"अरे, इसमें धन्यवाद कैसा, जोनी? यहां कोई भी तुम्हारे मित्रों को भगाने के लिए नहीं आएगा। और तो और हम तो यही चाहते हैं कि वे जब भी समय मिले तुमसे आकर मिले।"

जोनी ने अविश्वास के साथ डॉकटर की ओर देखा। सिटी अस्पताल का पांच मिनट वाला नियम और ग्रीनओक के अनुभव को उसने याद किया। ग्रीनओक में मुलाकात का समय समाप्त होने पर मुलाकातियों को बाहर कर दिया जाता था।

"जोनी, न केवल वे तुमसे आकर मिलें बल्कि यह भी

आकर देखें कि तुम यहां क्या करती हो, मसलन तुम्हारी फिज़ियोथेरेपी प्रशिक्षण आदि को।”

“डॉक्टर यह आप क्या कह रहे हैं? फिज़ियोथेरेपी के कमरे में क्या मेरे दोस्तों को आने देंगे? जोनी के चेहरे पर अविश्वास की छाया थी। जोनी को अपनी आंखो के सामने ग्रीनओक के पीटी कक्ष के बाहर टंगे ‘अन्दर आना मना है’ का बोर्ड दिखाई दिया।

“बिल्कुल सही जोनी। उन्हें ये सब देखने दो। तुम्हारे प्रशिक्षण का तरीका यदि वे देख लें तो तुम्हें इस अस्पताल में अधिक दिनों तक रहने की आवश्यक्ता नहीं होगी। क्या तुम्हें जल्द घर नहीं जाना है?”

डॉक्टर का प्रश्न जोनी को आश्चर्य में डाल दिया। अविश्वास के साथ उसने पूछा। “ऐं.... घर जाना है! क्या मैं आज कल में घर जा सकती हूं?”

“हाँ, लगभग तीन महीने के अन्दर।” ऐसे एक उत्तर की जोनी ने उम्मीद नहीं की थी। घर जाना.....! ......वह भी कुछ दिनों के बाद.....उसने सोचना बन्द कर दिया था। सच कहें तो उसने ऐसी उम्मीद छोड़ दी थी।

यह अस्पताल कितना अलग है? सिटी अस्पताल में किसी ने यह नहीं बताया कि उसकी बीमारी कितनी गंभीर है। वहां तो महीनों भर बाद यह पता चला कि उसकी बीमारी शाश्वत है। ग्रीनओक में उससे उसके स्वास्थ में आ रहे सुधार (वास्तव में ऐसा कुछ हुआ तो) के विषय में कभी किसी ने नहीं बात नहीं की। कोई उससे बात नहीं करता था। वे जैसे मांग करते रोगी उसका पालन करते, चाभी भरे खिलौने के समान।

ग्रीनओक में कभी किसी ने घर जाने के विषय में परवाह नहीं किया। ये उम्मीद भी लगभग समाप्त हो गई थी कि उसे कभी घर जाने को मिलेगा। यहां पर डॉक्टर खुद कह रहें हैं कि तीन महीने के अन्दर घर जा पाउंगी।

बाल्टिमोर से आए दोस्तों ने विदा लेना चाहा। जोनी के स्वास्थ में सुधार ने उन्हें काफी आनन्दित किया था। एकांत पाकर डिक जोनी से मिला। उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर प्यार करते हुए उसने कहा, "जोनी, तुम अच्छी हो जाओगी। हम एक साथ जीएंगे, मैं प्रार्थना कर रहा हूं।" उसकी आंखों में उम्मीद की किरणे थीं।

"डिकी, मैं भी यही चाहती हूं। परमेश्वर सहायता करे।" जोनी इतना ही कह सकी।

रांझो का थेरेपी प्रशिक्षण लोगों को अधिक स्वतन्त्र होकर कार्य करने के लिए योग्य बनाने के लिए था। पेट का और कंधे के मांसपेशियों का इस्तेमाल करके, हाथों को थोड़ा सा ऊपर करके जोनी ने प्रशिक्षण लिया। लेकिन कुहुनियों और उंगलियों का प्रयोग वह नहीं कर सकी। लेकिन बहुत जल्द ही उसने खुद भोजन करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसकी कलाई पर एक बेल्ट फिट किया गया। उसमें 45 अंश के झुकाव पर एक चम्मच लगाया गया। यह खाने के बर्तन तक चम्मच ले जाकर, उसमें भोजन भरकर मुहं तक पहुंचा कर खाने की विधि थी। लेकिन कई बार चम्मच से भोजन नीचे गिर जाता था। मुंह तक चम्मच पहुंचने तक चम्मच खाली हो जाता था। कभी-कभी मुहं की क्षमता से अधिक भोजन चम्मच में भर जाता था। पहले पहले यह तरीका अस्वाभाविक और असहनीय लगता था। किन्तु धीरे-धीरे जोनी पारंगत हो गई। वैसे भी डेढ़ साल के बाद खुद भोजन करने का अनुभव उसे बहुत सन्तुष्टि प्रदान की।

एक और विषय में रांझो, ग्रीनओक से अलग था। यहां पर पूरे समय अस्पताल के कर्मचारियों के अलावा कई कॉलेज विद्यार्थी अल्प अवधि के लिए काम करने के लिए आते थे। उनमें से कई लोग बिना तनख्वाह की परवाह किये कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य करते थे। जूड़ी नामक एक कॉलेज विद्यार्थिनी रांझो में काम करने के लिए आई थी। उसका मानना था कि समाज में कष्ट

भोगनेवालों की सेवा करना मसीही कर्त्तव्य है। इसलिए उसने अपना खाली समय रांझो में बिताने का निर्णय लिया था। जूड़ी बहुत जल्द ही जोनी की सहेली बन गई। वह आत्मिक रूप से परिपक्व युवती थी। अध्ययन करने और काम करने के साथ-साथ वह एक बाईबल समूह की सदस्या भी थी। अध्ययन समूह से मिलने वाली नई नई बातें उसने जोनी के साथ बांटना शुरू कर दिया। रांझो में आने के बाद बाईबल सीखने के लिए और मसीही अनुभव को बांटने के लिए और एक उचित सहेली मिलने के कारण वह बहुत प्रसन्न हुई। अभी वह अपने पुराने दोस्तों से बहुत दूर है। जोनी को लगा कि वो जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति पा रही है।

एक दिन सुबह जूड़ी एक व्हील चेयर लेकर जोनी के कमरे में पहुंची। "जोनी तुमने फिज़ियोथेरेपी में बहुत प्रशिक्षण पा लिया है। अभी बहुत देर तक एक ही स्थिति में बैठने और कुछ हद तक अपने हाथों को चलाने में तुम सक्षम हो। क्यों न अब थोड़ा यात्रा किया जाए? देखो ये व्हील चेयर तुम्हारे लिए है। तुम अकेले इसका इस्तेमाल कर सकती हो।"

"अकेले उपयोग करने लायक...!! इसका क्या मतलब? क्या यह कि धक्का देने की किसी की आवश्यक्ता नहीं पड़ेगी? क्या तुम सोचती हो कि इसे धक्का देने के लिए मेरे भीतर ताकत है?"

"जोनी, इसे धक्का देने की आवश्यक्ता नहीं है। इसमें मोटर लगा हुआ है। तुम अपने हाथों को ऊपर और नीचे हिला सकती हो। इसमें हाथ रखने के स्थान पर एक लीवर है। उस पर हाथ का दबाव पड़ने से यह चलने लगता है। हाथ हटाने से यह रूक जाता है। मुझे उम्मीद है कि तुम इसका उपयोग कर पाओगी।"

जोनी को उत्सुकता हुई। जूड़ी ने व्हील चेयर में बैठने में उसकी सहायता की। उत्साह के साथ उसने लीवर पर हाथ का दबाव बढ़ाया। व्हील चेयर धीरे-धीरे

लुढ़कने लगा। प्रारंभ में वह उस पर नियंत्रण नहीं कर पा रही थी। तब जूड़ी उसकी सहायता करती थी।

कुछ दिनों के अन्तराल में व्हील चेयर ड्राईविंग में वह पारंगत हो गई। यह उसे बहुत उत्साह से भर दिया। पलंग से व्हील चेयर तक की पदोन्नति। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति बनी कि वह व्हील चेयर से उतरती ही नहीं थी। पीटी रूम वगैरह में वह खुद जाने लगी। आत्मनिर्भरता की भावना उसमें धीरे-धीरे पनपने लगी। अस्पताल की दीर्घ गलियां उसकी यात्रा का गवाह बनती रहीं। जोनी के समान मोटर लगे व्हील चेयर चलाने वाले और भी लोग अस्पताल में थे। अक्सर गलियों में वे आपस में मिलते थे। यह मित्रता स्थापित करने में सहायक हुई। उनमें से रिक नामक व्यक्ति से जोनी की मुलाकात हुई। उसी के समान खेलकूद की दुनिया से सम्बंध रखने वाला युवक था।

"रिक, मैं तुमसे अधिक तेज व्हील चेयर चला सकती हूं।" एक दिन जोनी ने रिक से कहा, "उसकी यह बात रिक को चुनौती दी।"

"अच्छी बात है, क्यों न हम एक बार प्रतियोगिता करके देखें।" जोनी को भी यह चुनौती अच्छी लगी। "हां रेडी, वन, टू, थ्री जोनी ने गिनना शुरू किया।"

दोनों के व्हील चेयर अस्पताल के गलियों में लुढ़कने लगे। धीरे-धीरे दोनो की गति बढ़ती गई। आवाज सुनकर कमरों के अन्दर बैठे कुछ लोग बाहर की ओर झांकने लगे। विकलांगों की प्रतियोगिता देखकर वे मुस्कुराने लगे।

एक दूसरे के ठीक आगे पीछे दोनों व्हील चेयर द्रुत गति से आगे की ओर भाग रहे थे। इन सब बातों से अनजान एक नर्स औषधि कक्ष से ट्रे में औषधि लेकर आ रही थी। गली में होने वाले कोलाहल की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। बिल्कुल सामने आने पर ही जोनी ने उन्हें देखा। वह कुछ नहीं कर पाई। व्हील चेयर के धक्के से वह जमीन पर गिर पड़ी। ट्रे जमीन पर गिर पड़ा। दवाईयां

अस्पताल की दीवारों पर चित्रकारी कर रहीं थी।

जोनी स्तब्ध रह गई। ग्रीनओक में होती तो वह नर्स अब तक बदले की कार्य वाही कर चुकी होती। लेकिन यहां पर वह नर्स आकर उसे, ‘कोई बात नहीं, ध्यान से व्हील चेयर चलाओ’ कहकर चली गई। लेकिन इस घटना के कारण

जोनी के व्हील चेयर की गति की सीमा बांध दी गई।

कैलिफोर्निया कम्युनिटी ने रांझो अस्पताल के घेरे के भीतर व्हील चेयर चलाने वालों के लिए एक अलग सड़क का निर्माण किया था। इस रास्ते पर चलते हुए मरीज दीवाल के उस पार की बाहरी दुनिया को देख सकते थे। सड़क

में चलने वाले यात्रियों की सहानुभूतिपूर्ण नजरें उसके लिए असह्य थी। किन्तु फिर भी इस प्रकार की यात्राएं जोनी के मन और शरीर को ताजगी प्रदान करती थी। सड़क के किनारे लगे हुए पेड़ों की छाया.... अस्पताल के दीवारों में कैद जीवन से अलग ग्रामीण जीवन का परिवेश... ताजी हवा...।

सड़क के एक किनारे फास्ट फुड की एक दुकान थी। फुटपाथ के पैदल यात्री उनके मुख्य ग्राहक थे। फिर भी दुकान के पीछे व्हील चेयर में पहुंचने वाले विकलांगों के लिए अलग से एक काउन्टर था। वहां पहुंचने पर दुकान वाला आकर ऑर्डर लेता था और भोजन गोद में रखकर देता था। पर्स से पैसा लेकर बाकी वापस करता था।

15 **अप्रैल** 1969...

जोनी के घर जाने का दिन आया। अब वह स्वतंत्र रूप से व्हील चेयर पर यात्रा कर सकती है। हाथ में लगाए गए चम्मच की सहायता से भोजन कर सकती है। किन्तु वह उंगलियां चला पाने में असमर्थ थी। वह यह जानना चाहती थी कि कभी न कभी वह अपनी उंगलियों को चला पाने में समर्थ हो सकेगी या नहीं। किन्तु डाक्टर की बातों ने इस संभावना को भी नकार दिया था।

"जोनी, मैं तुम्हे बेकार की उम्मीद नहीं देना चाहता। यही अच्छा है कि तुम अपनी उंगलियों के इस्तेमाल की उम्मीद छोड़ दो।" बिना किसी लागलपेट के डाक्टर ने कहा।

वास्तव में ये जोनी के सुनने लायक बातें नहीं थी। फिर भी जोनी को ऐसी ही किसी उत्तर की उम्मीद थी। चाहे कुछ भी हो जाए कोई भी व्यक्ति अपनी उंगलियों के उपयोग की उम्मीद कैसे छोड़ सकता है...?

"किन्तु तुम इस बात की परवाह मत करो जोनी।" डाक्टर ने उसे सांत्वना दी। तुम अब व्हील चेयर में बैठकर इधर उधर आ जा सकती हो। सच कहूं तो

तुम व्हील चेयर ड्राइविंग में पारंगत हो गई हो। बिना किसी की सहायता के भोजन भी कर सकती हो। अब तो तुम स्वयं काफी कुछ कर लेती हो। तुम्हे हर बात के लिए किसी पर निर्भर रहने की आवश्यक्ता नहीं है।"

सच भी है। इस अस्पताल में आते समय ऐसी उम्मीद कतई नहीं थी कि इतनी जल्दी इतना सब कुछ हो पाएगा। फिर भी...।

जोनी ने डिक की बातों को याद किया। "मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। सब कुछ ठीक हो जाएगा। हम एक साथ जिएंगें।" उसी दिन उसने डिक को पत्र लिखा।

"डिकी, किन्ही अज्ञात कारणों से परमेश्वर ने हमारी प्रार्थना का उत्तर नहीं देने का निर्णय लिया है। डाक्टरों ने मेरे उंगलियों के क्रियाशील होने की संभावना को पूरी तरह नकार दिया है। अर्थात् मैं हमेशा दूसरों पर निर्भर रहूंगी। कभी भी एक पत्नी के कर्त्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पाउंगी।

"डिकी, मैं जानती हूं कि आप भी मुझे उतना ही प्यार करते हैं जितना मैं आप से करती हूं। किन्तु शायद परमेश्वर के मन में हम दोनों के लिए भिन्न योजनाएं होगी। इसलिए अब से हम केवल मित्रता का रिश्ता जारी रखेंगें। भविष्य की जिंदगी के लिए आप किसी दूसरी लड़की को ढूंढें। परमेश्वर निश्चय ही किसी भली लड़की को आपको पत्नी के रूप में देगा। मैं वह पद स्वीकार करने के योग्य नहीं हूं। ऐसे किसी रिश्ते के लिए मैं आपको उत्साहित नहीं करूंगी। ..... हम अच्छे मित्र बने रहेंगें।

जोनी

6

कैलिफोर्निया से वापस बाल्टिमोर पहुंचने पर जोनी के घर में उसके मित्रों का प्रवाह प्रारंभ हो गया। डिक रोज उससे मिलने आता। सामान्य रीति से वह उससे मिलता मानों कुछ विशेष नहीं घटा हो। इस दौरान उसने जोनी से उसके पत्र के बारें में कुछ नहीं कहा। लेकिन लगभग एक सफ्ताह बाद जब उन्हे एकांत मिला तब डिक ने इस विषय को उछाला।

"जोनी, मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि तुम ठीक होगी या नहीं। अब तुम यदि ठीक भी नहीं होती हो तो भी मुझे इसकी परवाह नहीं करता। तुम से विवाह करना मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। यदि ऐसा हुआ तो मैं दुनिया का पहला भाग्यशाली व्यक्ति होउंगा जो हमेशा व्हील चेयर में रहने वाली लड़की को इनाम के रूप में प्राप्त करेगा।"

जोनी को उसकी बातें बड़ी अजीब सी लगी। "डिकी, मैं कैसे इनाम बनूंगी।

मुझे आपकी बातें समझ में नहीं आ रही है।”

“तुम मेरे लिए निश्चय ही एक इनाम बनोगी।” आनंद से उसने कहा। “मैं तुम्हे और तुम्हारी विकलांगता को एक आशीष समझता हूं।”

“आशीष...। यह आप क्या कह रहे हैं, डिकी।”

“हां, आशीष। क्योंकि परमेश्वर के दान सदा भले होते हैं। यदि तुम मुझसे विवाह करोगी तो तुम मेरे लिए परमेश्वर प्रदत्त आशीष ठहरोगी। मैं तुम्हे ईश्वर की ओर से दिये गये एक महान आशीष के रूप में देखता हूं।”

“नहीं, डिकी। यह नहीं होगा। मेरी मुसीबतें आपके सोचने से परे है। मैं स्वयं इसे सह नहीं पा रही हूं। फिर कैसे इसे आपके कंधों पर रख दूं।”

“लेकिन जोनी, क्या तुम नहीं जानती कि बांटने से दुख आधा हो जाता है। परमेश्वर ने जो जीवन हमें दिया है उसे हम बांटेगें।”

“डिकी, ये बातें कहने में अच्छी लगती हैं। लेकिन वास्तविक जीवन में यह संभव नहीं हैं।”

क्षण भर के लिए डिक खामोश रहा। वह जोनी को छोड़ना नहीं चाहता था। किन्तु एक साथ की जिंदगी के लिए बेहद कठोर शब्दों में उसने इंकार कर दिया था। उसे बड़ी निराशा हुई। उसकी आंखें भर आई। मुस्कुराने का असफल प्रयास करते हुए उसने कहा। “शायद तुम सही हो। मैं संभवतः ऐसे जीवन के लिए परिपक्व नहीं हुआ हूं।” उसकी आवाज कांपने लगी थी।

जोनी कुछ कहना चाहती थी। लेकिन कह नहीं पाई। वह डिकी से दूर जाना नहीं चाहती थी। और तो और वह डिकी को पाने के लिए कुछ भी त्यागने को तैयार थी। किन्तु अपने जीवन की मुसीबतें किसी को देने के लिए वह तैयार नहीं थी। प्यार की कमी के कारण नहीं बल्कि प्यार की अधिकता के कारण ही उसने

डिकी के लिए अपने जीवन के दरवाजे को बंद कर दिया था। जोनी यह सब उससे कहना चाहती थी। किन्तु उसे इस बात का भय था कि ऐसा कुछ भी कहना उसे और निकट आने के लिए प्रेरित करता। इसिलिए वह जानबूझकर मौन रही।

काफी देर के बाद डिक ने विदा लिया। बाद के दिनों में वह बराबर जोनी से मिलता रहा। लेकिन उनका संबंध अब मित्रता तक सीमित रह गया था।

दो वर्षों के पश्चात् जोनी को घर में पाकर उसके मम्मी पापा बहुत संतुष्ट थे। जोनी भी घर आकर बहुत खुश थी। किन्तु उसके परिवार पर प्रतिकूल हवाएं चलती रहीं। कई ऐसी घटनाएं हुई जिसने उसके परिवार को झकझोर कर रख दिया। उसमें से प्रमुख था जोनी की बहन जय का तलाक। काफी दिनों से उसका पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रह गया था। वे अलग अलग रह रहे थे। और अब नियमानुसार उनका तलाक भी हो गया था। इसी के साथ जय और उसके बच्चे की जिम्मेदारी पुनः जोनी के पिता के कंधों पर आ पड़ी। जोनी की दुर्घटना से आर्थिक रूप से दयनीय हो चुके परिवार पर यह दोहरी मार थी। किन्तु बड़ी मुश्किल से उधार वगैरह लेकर उन्होने जय के लिए एक छोटा सा घर बनाया।

कुछ दिनों पश्चात् उन पर एक और विपदा आ पड़ी। जोनी की बड़ी बहन के बेटे केल्ली को मस्तिष्क में कैंसर के कारण अस्पताल में दाखिल करना पड़ा। केल्ली का पिता उसकी जिम्मेवारी उठाने के लिए तैयार नहीं हुआ। वह एक संवेदनहीन व्यक्ति थे। जिन्दगी में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी उठाने के लिए वह तैयार नहीं थे। परिणामस्वरूप उनके देखभाल की पूरी जिम्मेदारी जोनी के पिता के कंधो पर आ गई। दुःख पर दुःख आते रहे। उनके सवालों का जवाब किसी के पास नहीं था।

जोनी हर रीति से व्यथित हो गई। वह धीरे धीरे धैर्यशाली बन रही थी। तभी

जय का विवाह विच्छेदन और केल्ली की गंभीर बीमारी जैसी घटनाएं हुई। उसके मन में पुनः संदेह ने जन्म लिया। ऐसा क्यों हुआ....?

पिछले दो वर्ष की घटनाएं उसकी आंखों के सामने मानो चलचित्र की भांति घूम गई। समुद्र में छलांग लगाते वक्त हुई दुर्घटना.......सिटी अस्पताल का नरक तुल्य जीवन.....ग्रीन ओक के मन को व्यथित करने वाले दिन....असफल आपरेशन......उसे उम्मीद थी कि रांझो लोस अमिगोस में कुछ चमत्कार होगा। कम से कम उंगलियां ही काम करने लगेगा। किन्तु ईश्वर ने मुझे छोड़ दिया।

मैंने डिक को खो दिया। मैं अब एक सामान्य जीवन की उम्मीद नहीं कर सकती....। हमेशा इस प्रकार व्हील चेयर पर जीना होगा। मेरे कारण ही मम्मी पापा इतना दुःख सह रहे हैं। जय के जीवन में हो रही घअनाओं को वे कैसे सह रहे हैं? उस व्यक्ति ने जय और उसके बच्चे को अनाथ कर दिया है। इन सब के साथ केल्ली की बीमारी के रूप में एक और पहाड़ टूट पड़ा है।

अचानक क्षण भर के लिए जोनी को लगा कि परमेश्वर उसके साथ धोखा कर रहा है। उसने अपने पापा से इस विषय पर बात भी की।

"पापा, अपने साथ परमेश्वर ऐसा सब कुछ क्यों होने दे रहा है? अपने परिवार में हो रही घटनाओं को देखिए। पहले मेरी दुघटना, फिर जय का विवाह विच्छेद, और अभी छोटा केल्ली..... यह कैसा न्याय है?"

पिताजी ने उसके कंधों पर हाथों को रखकर उसकी आंखों में झांका। कांपती आवाज में उन्होने कहा, "बेटी, यदि तुम यह सवाल करोगी कि ऐसा क्यों हो रहा है तो शायद तुम्हे उत्तर न मिले। देखो, अपने साथ होने वाली घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए मैं एक धर्मशास्त्री या लेखक तो नहीं हूं। किन्तु हमें यह विश्वास करना है कि परमेश्वर हमसे बेहतर जानता है कि वह क्या कर रहा है।"

“पापा, यह सब बातें मेरी बुद्धि मे नहीं घुसती है।”

“देखो बेटी, कई बार तो हमने भी भक्ति के साथ प्रार्थना की है कि हे परमेश्वर, मैं एक महा पापी हूं। मेरे पाप के अनुसार मैं नरक की यातना के लायक हूं। इतनी बड़ी सजा से आपने मुझे बचाया। हम एक सांस मे कह डालते हैं कि हम परमेश्वर की भलाईयों के योग्य नहीं है। किन्तु जब किसी प्रकार की

कठिनाई या परीक्षा आती है हम उसी रीति यह भी कह डालते हैं कि हे परमेश्वर , यह ठीक नहीं है। मैंने ऐसा क्या किया है? मुझे लगता है कि जब हम यह कहते हैं कि हम नरक की शिक्षा के योग्य है तो फिर अपने जीवन में आने वाली उससे छोटी परेशानियों को हमें सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। है न?”

“पापा, तो क्या आप यह कह रहे हैं कि मेरी दुर्घटना, मेरा लकवा ग्रस्त होना

यह सब कुछ मेरे पाप का दंड है?"

"नही बेटी, मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। इसे कभी भी पाप का दंड नहीं समझना चाहिए। क्योंकि तुम्हारे पापों की सजा तो प्रभु यीशु ने क्रूस पर उठा लिया। अब परमेश्वर उसके लिए हमें दंडित नहीं करेगा। तब फिर यह सब क्यों हो रहा है, इस सवाल का जवाब मेरे पास नहीं है। परमेश्वर बेहतर जानता है कि वह क्या कर रहा है। मैं बस इतना ही कह सकता हूं। जोनी, हमें उस पर भरोसा रखने की आवश्यक्ता है। वह हमेशा के लिए छोड़ नहीं देगा।"

"पापा, आपकी बातें सही हो सकती है। लेकिन मेरी दुविधा यह है कि मैं असहाय हूं। अपनी हर छोटी बड़ी जरूरत के लिए दूसरों पर निर्भर हूं। यह बात मेरे भीतर घोर निराशा भर देती है। मैं अभी भी पूरी तरह व्हील चेयर वाली जीवन शैली की अभ्यस्त नहीं हुई हूं। मुझे तो यह भी संदेह है मैं कभी इस जीवन की आदी हो भी पाऊंगी। हर बार सोचती हूं कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन जल्द ही सारी उम्मीदों पर पानी फिर जाता है। मैं बहुत दुःखी हूं, पापा।"

"इसमें समय लगेगा बेटी। यहां पर तुम्हारी मदद के लिए हम सब हैं, बेटी।"

"किन्तु पापा, आप लोग कितने उपयोगी कार्य करते हैं। इस घर में और इसके चारों ओर आपके हाथों के कितने कार्य दृष्टिगोचर हैं। यह खूबसूरत मकान, आपके पेंटिंग्स्, शिल्प, और तो और आपके द्वारा बनाए गए फर्नीचर। आपके बाद भी ये वस्तुएं सब को आपकी याद दिलाती रहेंगी। मुझे देखिए, मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं है। इस प्रकार कुछ दिन और जिऊंगी। फिर मर जाऊंगी। एक बोझ हट गया....इस अलावा लोंगों के पास कहने के लिए कुछ नहीं होगा।"

पापा ने जोनी की आंखों की उदासी को पढ़कर कहा। "बेटी, तुम बहुत गलत

रीति से विश्लेषण करती हो। बेटी, इन हाथों से कुछ काम करने में कुछ नहीं रखा है। यह तो वास्तव में बहुत छोटी सी बात है। एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से पहचाना जाता है। या कहूं कि किसी के व्यक्तित्व और स्वभाव की विशेषता ही उसे महान बनाती है। देखो जोनी, व्यत्कित्व की विशेषता हाथ के काम में नहीं होती।"

"पापा, हो सकता है आपकी बातें सही हो।"

"कम से कम इस बात में तो सही है बेटी।"

जोनी तरह तरह की भावनाओं के अधीन हो गई। उसकी असहाय दशा ने उसे बहुत अधिक व्यथित कर दिया था। घर आने के पश्चात् जोनी थोड़ी बहुत आलसी हो गई थी। घर आने के बाद से वह ओकुपेशनल थेरेपी में ध्यान नहीं दे पा रही थी। उसने चित्र रचना भी छोड़ दी थी। जय का तलाक और केल्ली की बीमारी ने उसे निष्क्रिय बना दिया था।

डायना काफी समय तक जोनी की सेवा करने लगी। जोनी की बिखरी हुई दशा और आत्मविश्वास खोना वह सह नहीं सकी। जोनी निरंतर यह कहती रही कि वह एक बोझ है और वह किसी लायक नहीं है। डायना को उत्कट इच्छा हुई कि किसी न किसी प्रकार जोनी को एक अच्छी जिंदगी की ओर लौटाया जाय।

"जोनी, यह सही है कि कैलिफोर्निया के डाक्टरों ने कहा है कि तुम कभी भी चल नहीं पाओगी और ना ही अपनी उंगलियों का उपयोग कर पाओगी। लेकिन तुम्हे इतना अधिक निराश होने की आवश्यक्ता नहीं है।" डायना ने उसे सांत्वना देते हुए कहा।

"फिर तुम क्या चाहती हो कि मैं करूं।" जोनी के माथे पर बल पड़ गये।

"जितना तुम्हारे पास क्षमता शेष है उसका उपयोग करके तुम्हे कार्यरत होना

चाहिए।"

"मुझ जैसी विकलांग के पास कौन सी क्षमता शेष है? जो हाथ पैर तो क्या अपना शरीर भी नहीं हिला सकती है। मेरे पास तो कुछ भी शेष नहीं है। मैं सब कुछ खो चुकी हूं।"

"नहीं जोनी, तुम्हारी स्थिति इतनी बुरी नहीं है। ग्रीन ओक और रांझो अस्पताल मैं ने भी देखा है। वहां के लोग तुमसे भी कितनी बुरी दशा में है। दृष्टि खो चुके लोग....बहरे....गूंगे.....कुछ लोग तो मानसिक विकलांग हैं....सड़ाहट भरी जिंदगी। उनके बारे में कहा जा सकता हैं कि उनके पास कुछ भी शेष नहीं है। तुम निश्चय ही काम कर सकती हो।"

"ठीक है, देखते हैं।" जोनी ने इतना ही कहा। निश्चित रूप से वह जानती थी कि उसकी जिंदगी के लिए परमेश्वर की योजना है। लेकिन यह योजना क्या है यह नहीं जान पाना ही उसकी दुविधा का कारण था। एकांत मिलने पर वह प्रार्थना किया करती। हे परमेश्वर, आपकी इच्छा को पहचानने की बुद्धि मुझे दे। आपकी सेवा करने और आपके वचन को जानने का कुछ न कुछ माध्यम मुझे प्रदान कर।

"डायना, मैं अक्सर गहरी निराशा का शिकार हो जाती हूं।" जोनी ने कहा। "पिछले दो वर्ष से मैं इसी दशा में हूं। मैं तो परमेश्वर से यह प्रार्थना करती हूं कि मेरे जीवन में अपनी इच्छा को प्रगट करे। शायद तुम पूछोगी कि यह जानकर क्या होगा। निश्चय ही यह जानने की आवश्यक्ता है। बिना यह जाने मैं उसे कैसे पूरा करूंगी?"

"जोनी, मैं भी इस बात के लिए प्रार्थना करती हूं। हां, अभी याद आया....आज मेरा एक मित्र तुमसे मिलने आने वाला है।"

"कौन, ...किसिलिए?"

“उसका नाम स्टिवी एस्टस है। वह तुम्हारे लिए अन्जान है। वह आत्मिक विषयों पर बहुत उन्नत विचार रखता है। वास्तविक रूप से प्रभु से प्रेम करने वाला और परमेश्वर के वचन का गहराई से अध्ययन करने वाला व्यक्ति है स्टिवी। एक हाई स्कूल विद्यार्थी होने के बावजूद परमेश्वर के वचन की कई गहराईयों को सीखने में वह हमारी मदद करेगा।”

“डायना, तुम क्या कह रही हो? बाईबल की सच्चाईयों को सिखाने के लिए यहां आने वाला व्यक्ति एक हाईस्कूल विद्याथी है।”

“जोनी, पहले तुम उससे मिल तो लो। उसके बाद उसके बारे में कोई धारणा बनाना।”

शाम को स्टिवी पहुंचा। वह एक दुबला और लंबा लड़का था। दिखने में कुछ भी असाधारण नहीं था। किन्तु प्रथम क्षण से ही जोनी को लगा कि उसमें कुछ विशेषताएं हैं। उसके व्यवहार में एक परिपक्व मसीही के सारे लक्षण मौजूद थे।

यद्यपि वह उस घर में पहली बार आया था फिर भी उसके व्यवहार में अपरिचितता नहीं थी। उसके लिए सब कुछ सामान्य ही था। जोनी से भी उसने सामान्य व्यवहार ही किया। उसने उससे ऐसी युवती के समान व्यवहार नहीं किया जिसकी नियति आजीवन व्हील चेयर पर बन चुकी हो। उसका व्यवहार ऐसा था मानो किसी सामान्य स्त्री से बात कर रहा हो।

वह बहुत द्रुत गति से हाथों के इशारे के साथ बात करता था। उसकी बातों में गहरे आत्मविश्वास की झलक थी। उसकी बातों में वे सच्चाईयां निहित थी जो उसने वचन से जानी थी। और जिसे दूसरों को भी जानने की आवश्यक्ता थी।

“जोनी, इन दिनों परमेश्वर मनुष्यों के मध्य कितने अद्‌भुत रीति से काम करता है।”

"किसके जीवन में.....कहां......क्या कर रहा है?" वह पूछना चाहती थी। लेकिन उसने कुछ नहीं पूछा। स्टिवी स्वयं ही वर्णन करने लगा मानों उसने उसके अंतर्मन के प्रश्न को जान लिया हो।

"वुडलोन के यंग लाइफ समूह के बच्चे परमेश्वर से सीधे आशीषें प्राप्त कर रहे हैं। उसी प्रकार हमारी कलीसिया में भी बहुत से लोगों ने नया जीवन प्राप्त किया है। पिछले दिनों विवाह विच्छेदन तक पहुंचे एक परिवार को परमेश्वर ने छुआ। वे अभी प्रसन्नता से जी रहे हैं। एक युवक बुरी तरह नशे का आदी हो चुका था। लेकिन अब वह एक अच्छा विश्वासी जीवन व्यतीत कर रहा है। मेरी एक परिचित लड़की जो हर रीति से बरबाद हो चुकी थी उसके जीवन को परमेश्वर ने बदल डाला। आज वह एक अच्छी जिंदगी व्यतीत कर रही है।"

जब स्टिवी ने कहा कि इन दिनों परमेश्वर मनुष्यों के मध्य कितने अद्‌भुत रीति से काम कर रहा है तब जोनी ने चंगाई जैसे कुछ चमत्कारों की उम्मीद की थी। लेकिन स्टिवी ने जिन अद्‌भुत कामों का वर्णन किया था उनमें एक विशेषता थी। ये सारे काम लोगों के शरीर में नहीं परन्तु जीवन में हुआ था। पहली बार वह परमेश्वर की शक्ति को दूसरे रूप में देख रही थी......जीवन को बदलने वाली शक्ति के रूप में। शरीर की चंगाई के लिए परमेश्वर की शक्ति की कामना करने वाली जोनी के लिए यह एक नया अनुभव था। परमेश्वर की शक्ति से अनेक लोग जीवन के अर्थ को प्राप्त कर रहे हैं।

स्टिवी का आत्म विश्वास और आत्मिक परिपक्वता उसे औरों से भिन्न करती थी। उसके जीवन में परमेश्वर पर भरोसा, मसीही प्रेम, स्थिरता, आदि स्पष्ट दृष्टिगोचर थी। परमेश्वर के वचन की सच्चाईयों का उसने बड़े आधिकारिक रूप से और सरलतम भाषा में वर्णन किया। जोनी के लिए यह बात और भी आश्चर्यजनक थी कि वह मात्र सोलह वर्ष का किशोर युवक है।

"स्टिवी, तुम्हारी बातें मेरे लिए नई आत्मिक सच्चाई लेकर आई। मुझे और अधिक जानना है। तुम पुनः आना।" जोनी ने कहा।

"निश्चय ही जोनी....।" उसने ऐसे कहा मानो यह उसका कर्तव्य हो।

"देखो, यह सच है कि मैं परमेश्वर की संतान हूं। जोनी ने अंगीकार किया। किन्तु मैं परमेश्वर के वचन का ज्ञान नहीं रखती हूं। जहां तक मैंने जाना है, तुम मुझसे अधिक जानकारी रखते हो।"

"जोनी, यदि मैं यहां प्रत्येक बुधवार आऊं तो हम बाईबल से अधिक बातें सीख सकते हैं। मेरा मतलब एक छोटा बाईबल अध्ययन समूह.....।"

वाह.....यह तो एक उत्तम विचार है।" जोनी ने कहा।

"मैं भी रहूंगी। और फिर जय और कुछ सहेलियां।" डायना उत्साहित हुई।

इस प्रकार जोनी के घर पर स्टिवी एस्टस नामक सोलह वर्षीय किशोर की बाईबल कक्षाएं प्रारंभ हुई।

7

स्टिवी एस्टस मात्र सोलह वर्ष का किशोर है। हाईस्कूल का छात्र है। लेकिन उसके व्यक्तित्व का प्रभाव जय, जोनी, डिक, डायना, सबने अनुभव किया। एक प्रवचनकर्ता की निपुणता और एक सेवक के समर्पण भाव के साथ उसने कक्षाओं का संचालन किया।

स्टिवी को भी ये कक्षाएं अच्छी लगती थी। एक दिन उसने कहा, "जोनी यह घर और यहां का माहौल मुझे प्रसन्नचित्त करता है। यह एक विश्रामभवन जैसा मनोहर है।"

जैसे जैसे कक्षाएं बढ़ती गई एक बात उन्हे समझ में आ गई। वर्षो से मसीही होने के बावजूद वे बुनियादी मसीही सिद्धांतों का ज्ञान भी नहीं रखते। स्टिवी ने परमेश्वर के स्वाभाविक गुण, यीशु मसीह का ईश्वरत्व, पाप, मन परिवर्तन, उद्धार, नया जन्म आदि विषयों पर उसने कक्षा ली। उस पर परमेश्वर का विशेष

अनुग्रह था कि वह विषयों को एक दूसरे से पिरोकर बड़ी सरल भाषा में प्रस्तुत कर सकता था।

एक दिन उसने विजयी मसीही जीवन विषय पर कक्षा ली। उसने कहा, "जोनी यदि हम परमेश्वर के साथ जीते हैं तब हम निश्चय ही विजयी लोग हैं। परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में सृजा है। यह तुच्छ बात नहीं है कि हममें परमेश्वर का स्वरूप है। यह विजयी जीवन जीना हमारे लिए संभव बनाता है।

अधिकतर लोग विजयी मसीही जीवन के बारे में उचित ज्ञान नहीं रखते। उन्हे यह भी नहीं मालूम कि वास्तविक मसीही जीवन क्या है। कुछ लोग सोचते हैं कि बाईबल के कुछ पदों को याद रकर लेने से वे आम्मिक बन गये। किन्तु इस प्रकार कोई आत्मिक नहीं बनता है। इसी कारण कोई विजयी जीवन भी नहीं जी सकता। वास्तविक आत्मिकता तो इन वचनों को व्यवहारिक जीवन में अपनाने से है।

अर्थात् वही व्यक्ति आत्मिक है जिसके जीवन में वचन काम करता है। न कि वह जिसने अपने जीवन में वचन को संग्रहित कर रखा है। परमेश्वर का स्वरूप हममें होने के कारण परमेश्वर का वचन हममें कार्य करता है। हमें इस बात को जानना है और स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख दीन करना है। परमेश्वर ने हमें उक साधारण या पराजित जीवन जीने के लिए नहीं बुलाया है। परमेश्वर का स्वरूप हममें होने के कारण विजयी जीवन जीने की क्षमता भी हमारे भीतर विद्यमान है।"

जोनी आदरपूर्वक स्टिवी की बातें सुनती रही। उसकी बातें उसे सोचने के लिए मजबूर की। ....यदि परमेशवर ने मुझे एक विजयी जीवन जीने के लिए बुलाया है तो मैं उससे कोसों दूर हूं। उसने सोचा।

एक व्यक्ति की बुलाहट ही तो उसके लिए परमेरश्वर की इच्छा है? एक प्रकाशन के समान उसके दिल से यह आवाज उठी। उसने पिछले दिनों की अपनी

प्रार्थना को याद किया। परमेश्वर अपनी इच्छा मुझ पर प्रगट कर। इस प्रकार प्रार्थना करते समय कभी न कभी वह स्वयं चल पाएगी या नहीं। ....अपनी उंगलियों का उपयोग कर पाएगी या नहीं। अर्थात् अपने विषय में वह परमेश्वर के लिए सिर्फ दो ही संभावनाएं तलाशती थी। पहला, स्वनिर्भरता के साथ एक सामान्य जीवन, दूसरा व्हील चेयर पर एक असाधारण जीवन। दनमें से पहले के लिए वह प्रार्थना किया करती थी।

किन्तु अब स्टिवी के कथनानुसार परमेश्वर की इच्छा इन दोनों बातों से अलग भी हो सकती है।....एक विजयी जीवन।

स्टिवी एस्टस

"विजयी होने के लिए पैरों पर चलने की आवश्यक्ता नहीं है। उंगलियों का सक्रिय होना भी आवश्यक नहीं है। क्यों? क्योंकि विजयी जीवन के लिए परमेश्व्र का स्वरूप हमें सक्षम बनाता है। हमें परमेश्वर के स्वरूप को पहचानना है। उसकी शक्ति को कार्य करने देना है। विजयी होना है।"

जोनी को बड़ी सांत्वना मिली। क्षीण ही सही किन्तु एक उम्मीद अवश्य थी कि कभी न कभी सारी परेशानियां समाप्त होंगी और अद्भुत चंगाई मिलेगी। अक्सर वह अपनी मन की इस इच्छा को प्रगट नहीं करती थी। एक दो बार उसने अद्भुत चंगाई देने का दावा करने वाली सभाओं में भाग भी लिया था। वहां पर उसने कुछ लोगों को अच्छा होते हुए भी देखा था। उनकी गवाही को भी सुना था। लेकिन उसे किसी प्रकार की चंगाई नहीं मिली। "परमेश्वर ऐसा क्यों

करता है?" उसने मानों स्वयं से प्रश्न किया। एक बार उसने स्टिवी से भी यही प्रश्न किया था। "परमेश्वर केवल मुझे यह आश्चर्यजनक चंगाई क्यों नहीं देता है?"

"जोनी, क्या तुमने कभी इब्रानियों 11 अध्याय पढ़ा है?" स्टिवी ने पलटकर प्रश्न किया।

"हां, उसमें तो भक्तों के द्वारा विश्वास से आशीषें प्राप्त करने का वर्णन है। फिर क्यों मुझे विश्वास के द्वारा चंगाई नहीं मिली।"

"जोनी, इब्रानियों 11 अध्याय विश्वास योद्धाओं की प्राप्ति का वर्णन मात्र नहीं है बल्कि यह मानवीय दृष्टिकोण से होने वाली हानि का वर्णन भी है। विश्वास के द्वारा उन्होने राज्यों को जीता, न्याय के काम किये, प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया, सिंह के मुंह को बंद किया। बीमार और बलहीन लोगों ने स्वास्थ्य प्राप्त किया। किन्तु कुछ लोगों ने बेहतर जीवन पाने के लिए के लिए मुक्ति का इंकार किया। ....उन्होने मृत्यु तक कष्ट भोगा। कुछ लोगों ने मार और विभिन्न प्रकार की यातना सही। कुछ लोग तो अनाथ हो गये। (इब्रा 11:33-38) के अनुसार यह आवश्यक नहीं कि सब को चंगाई मिले या मुक्ति मिले।"

"लेकिन कई लोग प्राप्त करते हैं.....।"

"सही है। परमेश्वर आज भी वैसे ही कार्य कर सकता है जैसे प्रथम युग में किया। लेकिन महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या वह सबको इस प्रकार चंगाई देना चाहता है?"

"क्या परमेश्वर नहीं चाहता कि सब लोग चंगे हो जाएं? क्या वह यह चाहता है कि मैं बीमार रहूं?"

"निश्चय ही परमेश्वर यही चाहता है। लेकिन जोनी, हमें परमेश्वर के लिए

एक समय सारणी बना कर देने की आवश्यक्ता नहीं है। वह चाहे तो अभी तुम्हे अच्छा कर सकता है या फिर कभी। लेकिन हमारा वास्तविक छुटकारा तो तब होगा जब हम मसीह के साथ सहभागी होकर नया जीवन प्राप्त करते हैं। वास्तव में यहां के बंधन की अवस्था पुनरूत्थित जीवन के लिए सीढ़ी है। हमें इसका इंकार नहीं करना चाहिए। परमेश्वर के समय के लिए इंतजार करना महत्वपूर्ण है।"

"बाईबल यह सिखाती है कि यह शरीर एक तंबू के समान है। इस पृथ्वी का जीवन ही क्षणिक होता है। इस जीवन की सुविधाएं हमारे लिए इतनी महत्वपूर्ण नहीं है?"

वचन की गहराई ने जोनी को आश्चर्यचकित किया। उसने अपनी दशा को एक नई दृष्टिकोण से देखा। इब्रानियों 11 अध्याय विश्वास के द्वारा अद्‌भुत काम करने वालों का ही नहीं विश्वास के द्वारा कष्ट सहने वालों की सूची भी है। वचन सिखाता है कि भूखे, नंगे रहने वाले, निंदा सहने वाले वे लोग विश्वास की गवाही प्राप्त लोग थे। (इब्रानियों 11:39)

जब से डाक्टरों ने जोनी की अवस्था को शाश्वत ठहराया था तब ही से उसने यह सोच लिया था कि अब सदा के लिए निराश रहना ही उसकी नियति है। लेकिन जब स्टिवी के मुंह से उसने यह सुना था कि इस दुनिया का जीवन ही क्षणिक है तो यह नई बात न होने पर भी उसे एक नई उत्तेजना से भर दिया। संभव है कि इस उत्तेजना का कारण उत्तम पुनरूत्थान की आशा ही हो (इब्रानियों 11:39)। आने वाले जीवन की आशा वर्तमान जीवन के कष्टों को तुच्छ जानने में सहायक होती है। पौलुस की बातें उसे सांत्वना दी। कुरिन्थियों की दूसरी पत्री में पौलुस कहता है, "......क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण और अनंत महिमा उत्पन्न करता जाता है। ......अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती है।"

उसी पुस्तक के पांचवें अध्याय में भौतिक जीवन की क्षणभंगुरता और आनेवाले जीवन की महत्ता के बारे में वह वर्णन करता है। "....क्योंकि हम हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ भवन नहीं परन्तु चिरस्थाई है।"

आने वाले उस संसार का विचार जोनी के मन को ठंडक पहुंचाई। मेरी

विशेष हेडसेट के द्वारा फोन का इस्तेमाल करते हुए

शारीरिक अवस्था शाश्वत नहीं है....मसीह मुझे एक नया शरीर देगा।

स्टिवी, जोनी को और उन्नत विचारों की ले गया। उसके जीवन का अच्छा समय उसके किशोरावस्था का समय था। इसिलिए उसके सारे विचार वहीं जाकर अटक जाते थे। अच्छे समय के बारे में उसके सारे स्वप्न उसे उसकी किशोरावस्था या जवानी की अवस्था की ओर खींच ले जाते थे।

लेकिन परमेश्वर के वचन ने उसे सिखाया कि बीती हुई जिंदगी से अच्छी जिंदगी आने वाली है। यदि ऐसा है तो फिर बीते हुए कल का सपना क्यों देखें।

क्यों न आने वाली अच्छी जिंदगी का सपना देखा जाए।

जोनी अक्सर अपने घर में मनोविज्ञान की कक्षा में सिखाए गया एक खेल खेलती थी। इस खेल के माध्यम से दूसरों की मानसिक दशा को समझा जाता था। इस खेल को रोल प्ले कहा जाता था।

बुधवार के बाईबल अध्ययन के पश्चात् उन्होने यह खेल खेला। उस दिन जोनी ने डयाना की भूमिका निभाई और डायना ने जोनी की भूमिका निभाई। डिकी ने जोनी को उठाकर सोफा पर बिठाया। डायना, जोनी के स्थान पर व्हील चेयर पर बैठ गई।

"देखो, यह विचित्र है।" व्हील चेयर पर बैठकर जोनी बनने का प्रयास करते हुए उसने कहा। "तुम सब लोग व्हील चेयर को इतने भय के साथ क्यों देखते हो? इस प्रकार क्यों व्यवहार कर रहे हो? इसके चारों ओर इतना जगह खाली क्यों है? जैसे यहां किसी ने बाड़ा बांध रखा हो।"

"बहुत अच्छा डायना, तुमने व्हील चेयर में बैठे व्यक्ति की मनोदशा को पहचान लिया। व्हील चेयर पर रहते समय मेरे मन से भी यही विचार गुजरता है। तुमने उसे समझ लिया।"

जल्द ही बातचीत का विषय व्हील चेयर में बैठे व्यक्ति की मनोदशा और उनके प्रति दूसरों की प्रतिक्रिया हो गई। "लोग व्हील चेयर पर बैठे व्यक्ति को ऐसे देखते हैं मानो किसी कीमती पुरावस्तु को देख रहे हों। छोटा सा होने के बावजूद व्हील चेयर के पास से गुजरते हुए लोग इतना जगह छोड़ते हैं मानो किसी कार को साइड़ दे रहे हों।"

"जोनी, मुझे एक गिलास पानी चाहिए।" व्हील चेयर पर बैठे असहाय व्यक्ति का अभिनय करते हुए डायना ने कहा।

विकलांग मित्रों के साथ जोनी

जोनी सोफा में बैठी डायना की भूमिका निभा रही है।

"ओहो....। एक मिनट...। ये टी वी का सीरियल जरा खत्म होने दो। विज्ञापन के समय पर ला दूंगी। ठीक है....?" जोनी ने डायना की भूमिका निभाई। जोनी को संदेह हुआ कि कई बार वह भी दूसरों की भावनात्मक आवश्यक्ताओं की परवाह किये बिना आर्डर दिया करती है। उसने निर्णय लिया कि अब से दूसरों की सुविधाओं का ध्यान रखा करूंगी।

दिन प्रतिदिन वचन को किस प्रकार व्यवहारिक बनाया जा सकता है इस विषय पर एक अध्ययन बाईबल स्टडी ग्रुप में किया गया। स्टिवी ने इस विषय पर विस्तृत रूप में एक कक्षा ली। "हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं। उसमें की सच्चाईयों को ग्रहण करते हैं। कई बार हम उसे अपनी बुद्धि में ही रखते हैं। अर्थात् हम पहले हम उसे मन में ग्रहण करते हैं। फिर हम उसका विश्लेषण करते हैं। मैं बौद्धिक रूप से इस बात को जान जाता हूं कि मानव जाति के लिए परमेश्वर की यही इच्छा है। शायद यह ज्ञान हमें आनंद दे। किन्तु यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव नहीं है। लेकिन जब मैं इस सच्चाई को जीवन में परखता हूं तो यह मेरे लिए व्यक्तिगत अनुभव बन जाता है। इस प्रकार मैं वचन की सच्चाईयों को अपनी बुद्धि से अपने जीवन में उतारता हूं।

इस पर थोड़ा और प्रकाश डालता हूं। मनुष्य के जीवन के अनुभवों में परमेश्वर स्वयं को प्रगट करता है। संपूर्ण बाईबल में इसी का विवरण है। बाईबल के चरित्रों का वर्णन एक युग के लिए मात्र नहीं है। आज हमारे लिए भी यह उतना ही प्रासंगिक है। वतर्मान समय में भी परमेश्वर का स्पर्श लोगों को प्राप्त होता है।

8

1970 में केल्ली की मुत्यु हो गई। मस्तिष्क का कैंसर ने उसे लगभग एक वर्ष तक उसे काफी दर्द दिया। लेकिन के चेहरे पर विद्यमान शांति, धैर्य, उन्हे परमेश्वर के निकट आने में और अधिक सहायता किया।

यदि कुछ माह पहले उसकी मृत्यु होती तो शायद वे बिखर जाते। किन्तु स्टडी ग्रुप में सिखाए गए वचन उन्हे परमेश्वर पर और निर्भर होने के लिए प्रेरित किया।

"केल्ली की मृत्यु एक घटना है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस घटना पर हमारी प्रतिक्रिया क्या है? क्या वैसी प्रतिक्रिया जैसी पवित्रात्मा चाहता है।

"प्रभु का आत्मा जिस व्यक्ति के अंदर वास करता है वह स्वतंत्रता का अनुभव करता है। इसके परिणामस्वरूप वह अपने जीवन से यीशु को प्रतिबिंबित करने वाला बनता है। हम दिन प्रतिदिन प्रभु के स्वरूप में बदलते जाते हैं।" (2 कुरि 3:17:18)

जोनी ने पवित्रात्मा की उपस्थिति में रहकर परिस्थितियों का सामना करने का निर्णय लिया। स्टिवी ने एक सटीक उदाहरण देकर अपनी बात को समझाया। हमारी जिंदगी परमेश्वर की एक रचना है। एक चित्र रचना। वह रोज हमें बनाता है। एक अच्दा चित्र बनने का उत्तम तरीका है धैर्य के साथ परमेश्वर के कार्य की प्रतीक्षा करना। लेकिन हम लोग जल्दबाजी करते हैं। उससे क्या होता है? जब परमेश्वर चित्र की रचना कर रहा होता है तब हम कुछ रेखाएं खींचने लगते हैं। रंग लगाने लगते हैं। परिणाम स्वयप चित्र विरूप हो जाता है। यदि हमें एक चित्र बनना हो तो हमें स्वयं को उस चित्रकार के हाथों में देना होगा।

एक और बात है। एक चित्र, चित्रकार के मन का प्रगटीकरण है। उसमें किसी को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। यदि हमें परमेश्वर को प्रतिबिंबित करना है तो हमें शतप्रतिशत परमेश्वर को कार्य करने देना है।

इसमें एक बात और है जोनी। तुम्हारा शरीर, व्हील चेयर की अवस्था यह सब एक कैनवास मात्र है। उसमें परमेश्वर एक खूबसूरत चित्र बना रहा है। एक आर्ट गैलरी में लोग कैनवास देखने नहीं बल्कि चित्र देखने जाते हैं। तुम्हारी व्याकुलता के कारण मैं यह कह रहा हूं। व्हील चेयर पर देखकर लोग तुम्हारे बारे में क्या सोचते होंगें ? यही सब विचार तुम्हे मथता रहता है।

जोनी रोमांच से भर गई। कितनी उन्नत आत्मिक सच्चाई है। स्टिवी ने कितनी सरलता के साथ इसका वर्णन किया। मेरी व्हील चेयर की जिंदगी परमेश्वर का कैनवास है। परमेश्वर मेरे ऊपर अपनी रचना कर रहा है। यदि चित्रकार की क्षमता पर भरोसा हो तो फिर चित्र को लेकर इतनी व्याकुलता क्यों? धीरज के साथ यदि इंतजार करूंगी तो मसीह का स्वरूप मुझमें प्रगट होगा।

आज व्हील चेयर की जिंदगी के बारे में कितना भिन्न दृष्टिकोण मिला। एक समय ऐसा भी था जब मेरे लिए यह एक असह्य बोझ था। लेकिन आज प्रभु ने

उसे हल्का कर दिया है। आज वह परमेश्वर के कामों को प्रगट करने वाला एक कैनवास है। यह परमेश्वर का अनुग्रह है।

जोनी की सेवा निर्बाध रूप से चलती रही। रान्डल्फ शहर के निकट स्थित यंग लाइफ क्लब ने जोनी को परामर्श दाता के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया। यह जोनी के लिए बेहद खुशी की खबर थी। हाईस्कूल और जूनियर कॉलेज की लड़कियों के साथ अपने विश्वास को बांटने अवसर उसे मिला। जोनी के जीवन में परमेश्वर द्वारस किये जाने वाले कार्यों का वर्णन उन लड़कियों के जीवन में आत्मविश्वास और उत्साह भरने के लिए काफी थे।

परमेश्वर का वचन विश्वासयोग्य है। जोनी ने उनसे कहा। मैंने इस सच्चाई का अनुभव किया है। व्हील चेयर के अनुभव में परमेश्वर विश्वासयोग्य है। व्हील चेयर की जोनी रूपी कैनवास पर परमेश्वर अपनी विश्वस्तता का चित्र बना रहा है।

संभवतः रोम के कारागृह में रहते हुए पौलुस ने फिलिप्पी कलीसिया को पत्र लिखा था। जोनी को फिलि 1:12 स्मरण हो आया। हे भाईयों मैं यह चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि मुझ पर जो बीता है उससे सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है।

जोनी को बड़ी प्रसन्नता महसूस हुई। मेरे साथ हुई दुर्घटना के पीछे परमेश्वर का एक उद्देश्य था। मेरे जीवन की अवस्थाएं परमेश्वर के राज्य की बढ़ती का कारण बनी है। बुलाए हुओं के लिए सब कुछ (व्हील चेयर भी) भलाई ही को उत्पन्न करता है।

वह आगे पढ़ने लगी। उसने फिलि 1: 30 पढ़ा। ...तुम्हे वैसा ही परिश्रम करना है जैसा तुमने मुझे करते देखा है.....। उसे प्रथम सदी के पौलुस के अनुभव अपने से लगे। पौलुस कहता है कि वह बंधित हैं किन्तु परमश्वर का वचन बंधित नहीं है। ....यहां तक कि कैद भी हूं परन्तु परमेश्वर का वचन कैद नही है। इस कारण

मैं चुने हुए लोगों के लिए दुःख भी उठाता हूं। पौलुस व्हील चेयर के बंधन में था। मैं भी व्हील चेयर के बंधन में हूं।

लड़कियां जल्द ही परामर्शदात्री के रूप में जोनी के करीब आ गईं। व्यक्तिगत

प्रश्न पूछने में भी उन्होने संकोच नहीं किया। जोनी के परामर्श ने उन्हे नई आत्मिक उंचाईयों पर पहुंचने में सहायता किया। उसके परामर्श ने कुछ लड़कियों के कैरियर को ही बदल दिया था। उदाहरण के लिए एक लड़की डेबी ने फ़िज़ियोथेरेपिस्ट बनने का निर्णय लिया ताकि वह जोनी जैसे विकलांगों की

सहायता कर सके।

जोनी ने कुछ मित्रों के साथ मिलकर एक गीत मंडली की स्थापना की। अक्सर यंग लाइफ और यूथ फोर क्राइस्ट की सभाओं में वे ही गीतों की प्रस्तुति देने लगे।

रात के बाईबल अध्ययन के बाद जोनी का भवन अक्सर संगीतमय हो जाता। क्रेग गारियट उनका बेस गिटारवादक था। कई बार आवाज की सांद्रता के कारण उन्हे खिड़कियां खोल देनी पड़ती। जोनी के मम्मी पापा भी उनकी गीतमंडली में शामिल हो जाते।

दिन इसी प्रकार बीतते गये। गीत, संगीत, बाईबल अध्ययन....। अचानक एक दिन स्टिवी की घोषणा ने सबको चौंका दिया। स्टिवी ने बाईबल का अध्ययन करने हेतु सेमिनरी जाने का निर्णय लिया है।

जोनी को सबसे अधिक दुःख हुआ। स्टिवी के द्वारा ही परमेश्वर ने उसे वचन की पवित्रता में बढ़या था। स्टिवी, अब मुझे वचन का ज्ञान कौन प्रदान करेगा? मैंने तुमसे ही वचन का इतना गहरा ज्ञान प्रात किया है। पिछले वर्ष भर से तुम ही मेरे आत्मिक गुरू हो।

जोनी, यह सही नहीं है। यह सच है कि परमेश्वर ने मुझे इस्तेमाल किया है। लेकिन तुम्हे सिखानेवाला, अगुवाई करने वाला सब पवित्रात्मा है। पवित्रात्मा ही तुम्हारा गुरू है। क्या तुम यह साचती हो कि मेरे जाने से परमेश्वर तुम्हे छोड़ देगा?

स्टिवी के पत्र लगातार आते रहे। उसकी कमी सबको खलती रही। लेकिन आत्मा की अगुवाई वाली बात सच साबित हुई। बिना किसी की सहायता के वचन को समझने की परिपक्वता परमेश्वर ने उसे प्रदान की।

9

जोनी ने चित्र रचना में अधिक ध्याय देने का निर्णय लिया। उसने नहीं चाहा कि लोग उसके चित्रों को एक ऐसे व्यक्ति के चित्र के रूप में जाने जो मुंह में पेंसिल पकड़ कर चित्र रचना करती है। उसने चाहा कि उसके चित्र व्यवसायिक हों।

वह अक्सर अपने बनाए चित्रों को अपने खास मित्रों को विशेष अवसरों पर उपहार स्वरूप दिया करती थी। चित्र रचना से उसे इससे अधिक उम्मीद नहीं थी। लेकिन जोनी करियर को बदल देने वाली एक घटना उन्हीं दिनों हुई। नील मिल्लर नामक एक एक्ज़िक्यूटिव के आगमन के साथ यह हुआ। वे ऐसे स्थानों पर जाकर कार्य प्रारंभा करने वाले व्यक्ति थे जहां साधारणतः अन्य लोगों को कोई संभावना नज़र नहीं आती थी। वे जोनी के पिताजी से मिलने आये थे। स्वागत कक्ष के दीवार पर टंगे चित्र को देखकर उन्होने पूछा, “यह छपाई है या

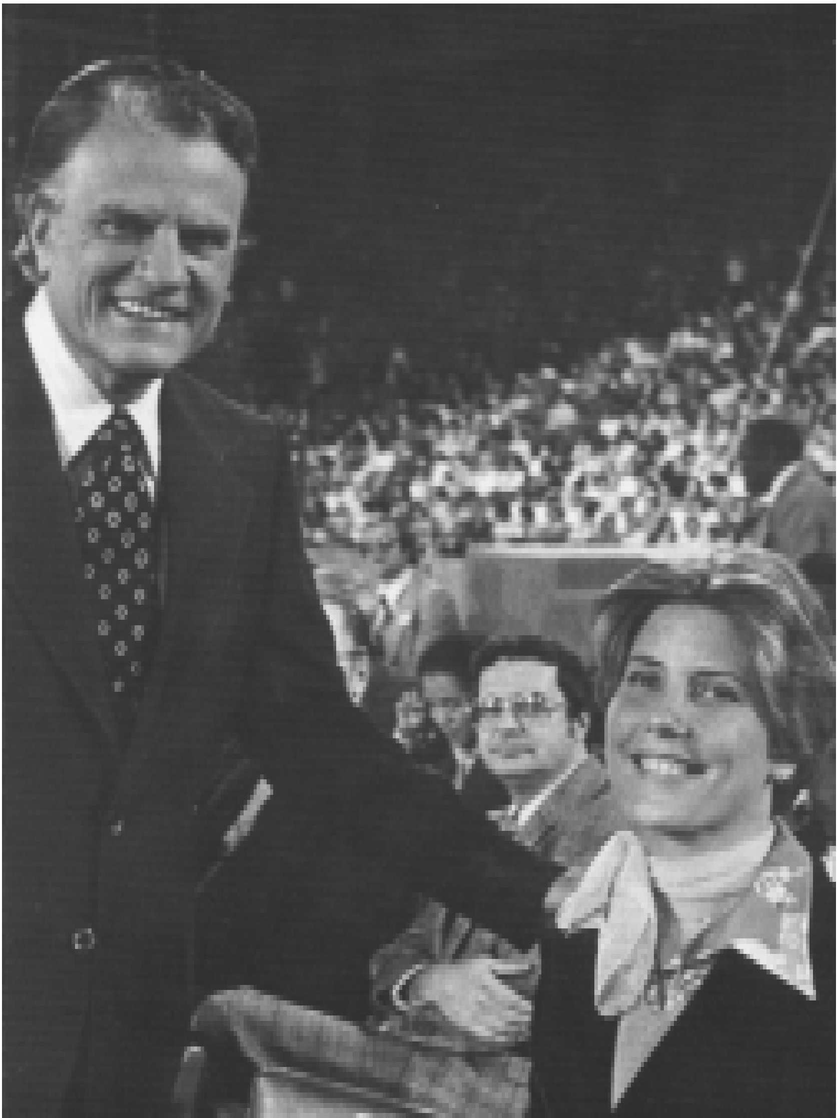

1977 में क्रूसेड के दौरान बिली ग्राहम के साथ

ओरिजिनल है?"

"वह ओरिजनल है।" जोनी के पिता ने कहा। "सच कहूं तो वह मेरी बेटी जोनी की रचना है।"

"सच....? यह बहुत ही सुंदर है। वह निश्चय ही एक उम्दा कलाकार है।" चित्रों में अपनी विशेष रूचि के कारण उन्होने कहा।

"देखिए श्रीमान एरिक्सन, कितनी सावधानी के साथ इसे बनाया गया है। यह कितनी वास्तविक लग रही है ? निश्चय ही उसकी अपनी एक शैली है। उसने रंगों के इस्तेमाल में आवश्यक नियंत्रण भी रखा है।" चित्र को अपलक निहारते हुए उन्होने कहा।

"धन्यवाद श्रीमान् मिल्लर। आपकी बातें मैं अपनी बेटी तक पहुंचा दूंगा। हां, एक और बात जानना आपके लिए बेहद रूचिकर होगा। श्रीमान् मिल्लर मेरी बेटी एक लकवा ग्रस्त लड़की है। वह हाथों से चित्र रचना नहीं करती है। उसने पेंसिल को मुंह में पकड़कर इस चित्र को बनाया है।"

"ओह नहीं....!!" विस्मय से उनकी आंखें फैल गई। वाकई अद्भुत है। श्रीमान् मिल्लर ने कहा।

"क्या, कभी उसके चित्रों की प्रदर्शनी लगी है?" श्रीमान् मिल्लर ने पूछा।

"नहीं ऐसा कुछ नहीं है। चित्रों को बनाकर वह या तो घर में सजाती है या फिर अपने मित्रों के जन्मदिन जैसे अवसरों पर भेंट करती है। बस.....।"

"किन्तु इतनी अद्भुत कला का प्रदर्शन न करना तो अन्याय है। यदि मैं एक प्रदर्शनी का आयोजन करूं क्या वह सहमत होगी? "

"क्यों नहीं...?" अगले कुछ ही दिनों में श्रीमान् मिल्लर का फोन आया। जोनी के चित्रों की एक छोटी सी प्रदर्शनी बाल्टिमोर के एक होटल में आयोजित

की गयी है। पिताजी ने जोनी के बनाए चित्रों को इकठ्ठा करे उन तक पहुंचा दिया।

जोनी को बड़ी प्रसन्नता हुई। छोटी सी प्रदर्शनी होने के बावजूद कुछ लोग तो मेरे चित्रों को देखने का जहमत उठाएंगें। उसने उम्मीद किया।

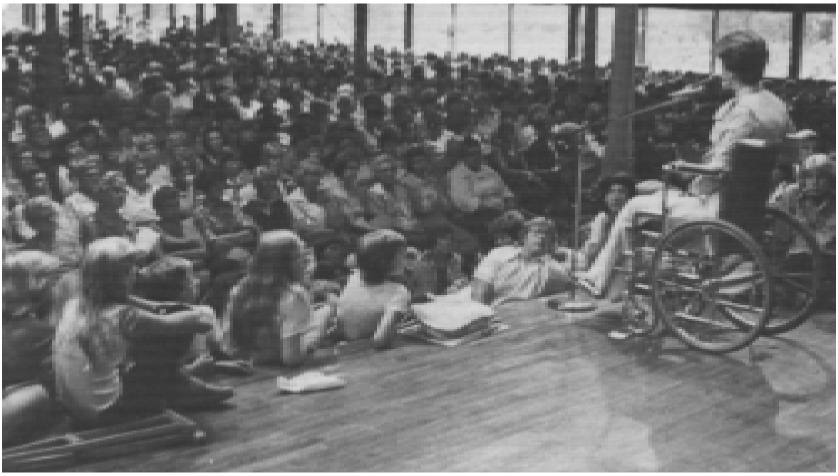

1977 में क्रूसेड के दौरान बिली ग्राहम के साथ

काश कि एकाध चित्र बिक जाते....। उसने मन में सोचा।

प्रदर्शनी के दिन जोनी डायना और जय के साथ प्रदर्शनी वाले स्थल की ओर रवाना हुई। श्रीमान् मिल्लर ने उनसे 10 बजे तक पहुंचने का निर्देश दिया था। रेस्टोरेंट के सामने से साउथ स्ट्रीट की तरफ मुड़ने का उनका प्रयास विफल हो गया क्योंकि वहां भारी ट्रैफिक जाम था।

"पता नहीं, क्या हुआ है। कहीं सड़क पर कुछ मरम्मत तो नहीं चल रहा है?" जोनी ने पूछा। "सड़क को बाधिक कर वे लोगों को इस प्रकार क्यों परेशान

करते हैं?"

"नहीं मालूम.....। चलो, हम दूसरी तरफ से निकल चलते हैं।" जय ने कार को आगे की ओर बढ़ाई।

"रूको...। मुझे नहीं लगता कि हम उस तरु से भी जा पाएंगें। देखो, वह पुलिस वाला सबको दूसरी दिशा से भेज रहा है।

"व्यापारियों का कोई सम्मेलन चल रहा होगा।"

जय गाड़ी मोड़ने ही वाली थी। अचानक ही उन्होने सामने बंधे हुए बैनर को देखा।

'जोनी इरिक्सन दिवस'

किसी को भी विश्वास नहीं हुआ। होटल के सामने विशाल जन समूह। टीवी कैमरा के साथ लोग उसके इंतजार में खड़े हैं। जय काफी मशक्कत के बाद गाड़ी को होटल के सामने तक पहुंचाई। कार से निकलकर व्हील चेयर पर बैठने पर संवाददाताओं की भीड़ ने उसे घेर लिया। न्यूज अमेरिकन नैशनल ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन, एफ. टी.डी के संवाददाता जोनी से अलग अलग प्रश्न करते रहे। सिटी हांलैंड अस्पताल में प्रवेश करते समय आयोजकों में से एक व्यक्ति आकर गुलदस्ता भेंट करके उसका स्वागत किया।

जोनी को सबसे अच्छी बात यह लगी कि उसके चित्रों की उत्तमता के कारण ही लोगों ने उसके चित्रों को पसंद किया। उन सबने उससे एक सामान्य व्यक्ति की तरह बात किया। संवाददाताओं की प्रश्नावली में भी व्हील चेयर या उसकी विकलांगता नहीं थी। उन्होने उससे व्यवसायिक प्रश्न पूछे। मसलन- क्या आपने कला का विधिवत प्रशिक्षण लिया है। आपको चित्र रचना के लिए कहां से प्रेरणा मिलती है। एक चित्र की रचना करने में आपको कितना समय लगता है?..

जन समूह के थोड़ा थमने पर श्रीमान् मिल्लर एक युवक को लेकर उसके पास पहुंचे। क्या आप इनसे थोड़ी देर बात करेंगी? जोनी के जवाब की प्रतीक्ष किये बिना वे वहां से चले गये। वह एक लंबा और खूबसूरत युवक था।

"आपसे मिलकर खुशी हुई। कृपया यहां बैठ जाईये।"

वह युवक कुर्सी पर बैठ गया।

"अब इनसे क्या कहूं? मिल्लर ने इन्हे मेरे पास क्यों लाया है? ये तो कुछ बात भी नहीं करना चाह रहे हैं। क्या करते हैं?" अंत में जोनी ने प्रश्न किया।

"कुछ नहीं करता हूं। अग्निशमन विभाग में नौकरी करता था। लेकिन अब मैं नौकरी नही कर सकता हूं।"

"ओह...! क्यों क्या हुआ?" जोनी ने पूछा।

"मेरे साथ एक दुर्घटना हो गई थी।"

"ओह...!"

वह व्यक्ति बहुत परेशान लग रहा था। वह बात करने की इच्छा नहीं दिखा रहा था। "देखिए...।" उसने कहा। "मुझे भी नहीं मालूम कि मैं यहां क्यों आया हूं। श्रीमान् मिल्लर ने कहा था कि आप से बात करने से अच्छा होगा...आपने बहुत निराशा में दिन व्यतीत किये हैं......इत्यादि।"

"हां, यह सही है। मैं तो इतना अधिक निराश थी कि आत्महत्या के अलावा कोई और विचार मेरे मन में नहीं आता था।"

जोनी थोड़ी देर के लिए रुकी। तब भी जोनी को यह समझ में नहीं आया था कि श्रीमान् मिल्लर ने उसे जोनी के पास क्यों भेजा है ? इस युवक को क्या चाहिए?

उसने जोनी की ओर देखा। उसने धीरे से जैकट के जेब से अपने हाथों को बाहर निकाला। उसके हाथों के दोनों पंजे गायब थे।

"इन ठूंठों को देखिए। अब कभी मेरे हाथ नहीं होंगें। मैं इस बात को सह नहीं पा रहा हूं। अब कभी मेरे हाथ नहीं होंगें। मैं इस बात को सह नहीं पा रहा हूं।"

निराशा और दुःख के कारण उसका गला रुंधने लगा। बोलते बोलते उसकी आवाज टूट गई।

मुझे खेद है। जोनी ने कहा। लेकिन मैंने यूं ही नहीं कहा है। मैं भी इन परिस्थितियों से गुजर चुकी हूं। आपके भीतर का क्रोध, दुःख, निराशा, छले जाने का भाव, आत्म सम्मान को पहुंची चोट, इन सारी अवस्थाओं को मैने भी पार किया है। संभव है कि पुरूष होने के नाते आपके लिए यह अधिक वेदनाजनक हो। लेकिन मैं सोचती हूं कि इन बातों में मैं आपके साथ एकात्मकता प्राप्त कर सकती हूं।"

जोनी ने अस्पताल के दिनों की मानसिक व्यथा का वर्णन उससे किया। उसने उन्हे सांत्वना दिया कि उसकी सारी भावनाएं स्वाभाविक है।

"किन्तु आप तो बहुत प्रसन्नचित्त लग रही हैं। आपने कैसे उन दिनों को पार किया।" उसे आश्चर्य हुआ कि यह लड़की कैसे इस निर्जीव शरीर के साथ प्रसन्न रहती है?

जोनी ने अपनी संघर्ष की कहानी उसे कह सुनाई। यीशु में होकर परमेश्वर के साथ स्थापित होने वाले संबंध और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली शक्ति के बारे में वर्णन किया। लगभग आधे घंटे तक उन्होने बातचीत की। विदा लेते हुए उस युवक ने कहा, "धन्यवाद जोनी। मिल्लर ने सच ही कहा था। आपसे बात कर मुझे काफी लाभ हुआ।"

जोनी ने समझ लिया कि अपने समान अनुभव वालों के साथ वह काफी सहजता और प्रभावशाली रीति से बात कर सकती है। पौलुस यिर्मयाह, अयूब, पौलुस जैसे बाईबल के चरित्रों उसे इसिलिए अधिक प्रभावित किया क्योंकि उनके समान अनुभव जोनी के भी थे। जोनी ने निश्चय किया कि उसे विकलांग लोगों के साथ अधिक समय व्यतीत करने की आवश्यक्ता है।

वह बैठी विचार कर ही रही थी कि न्यूज़ अमेरिकन समाचार पत्र का संवाददाता सीमुर कोफ अपना माइक थामे उसके पास आया और पूछा, "अपने चित्रों में हस्ताक्षर करते समय आप PTL क्यों लिखती हैं?"

""PTL का अर्थ है *प्रेइस दि लॉर्ड* अर्थात् परमेश्वर की स्तुति हो। मैं ईश्वर को उसकी सारी भलाइयों के लिए धन्यवाद देती हूं। श्रीमान् कोफ, परमेश्वर संभालने वाला परमेश्वर है। परमेश्वर से प्रेम करने वालों के जीवन में होने वाली सारी घटनाएं उनके लिए भलाई ही को उत्पन्न करती है। मैं अपने जीवन के अनुभवों से कह सकती हूं कि परमेश्वर ने इस दुर्घटना में भी मेरे जीवन में भलाई किया। इस घटना के माध्यम से उसने मेरे स्वभाव को बदल दिया। मेरे जीवन को एक लक्ष्य मिला। मेरे चित्रों में आप मेरे संतृप्त मन को देख सकते हैं।"

न्यूज़ अमेरिकन समाचार पत्र में जोनी के बारे में एक पूरे पृष्ठ का फीचर आया। जोनी एरिक्सन दिवस को अच्छा कवरेज दिया गया था। जोनी की गवाही को बिना काटछांट के प्रसारित किया गया था। इसके अलावा उन्होने जोनी का एक इंटव्यू लेकर एक टेलिफीचर बनाने की योजना बनाई।

जोनी को सबसे अधिक आश्चर्यचकित करने वाली बात थी उसके चित्रों का बिकना। बाल्टीमोर की प्रदर्शनी ने उसे बहुत अधिक प्रसिद्धि दी। बहुत जगहों से उसे निमंत्रण मिलने लगे। विद्यालयों, कलीसियाओं और सार्वजनिक सम्मेलनों में उसे निमंत्रित किया गया। उन स्थानों पर उसे गवाही का अवसर दिया गया।

रेडियो और टी वी पर उसके कार्यक्रम आने लगे। ओरिजिनल पेंटिग्स् के अलावा जोनी कुछ काड्र्स् डिज़ाइन करके छपवाई। इसमें वह सफल हुई। उस कंपनी को उसने जोनी PTL नाम दिया।

अन्य तीन सहायकों को लेकर उसने बाल्टीमोर में एक पुस्तकालय प्रारंभ किया। पुस्तकालय से बढ़कर वह एक परामर्श केन्द्र के रूप में कार्य करने लगा। क्रमशः वह शहर का एक प्रसिद्ध मसीही केंद्र बन गया। उन्ही दिनों व्हाईट हाऊस से उसे एक निमंत्रण मिला। राष्ट्रपति की ओर से भोज पर आमंत्रण था वह। जोनी ने प्रथम महिला श्रीमती पाट् निक्सन को अपनी एक पेंटिग भेंट की।

अपनी गवाही को उसने एक लघु पुस्तिका के रूप में उसने छपवाया। जहां भी उसे बुलाया जाता वहां वह इस पुस्तिका का वितरण करती।

1974 में अमेरिका में सर्वाधिक लोगों के द्वारा देखी जाने वाली टुडे शो नामक एक कार्यक्रम में उसे अवसर मिला। उया दिन करोडों लोगों ने उसकी गवाही को सुना।

आज जोनी एक विश्वप्रसिद्ध शख्सियत है। जोनी की गवाही सुनने के लिए हजारों लोग इकठ्ठे होते हैं।

बिली ग्राहम इवेंजलिस्टिक असोसिएशन ने जोनी की कहानी पर एक फिल्म भी बनाई है। आज जोनी एक बहुमुखी प्रतिभा के रूप में जानी जाती है। वह चित्रकारी, गायिका, लेखिका, परामर्शदाता जैसे रूप में जानी जाती है। इन सबसे परे वह मसीह की गवाही रखने वाली एक सशक्त योद्धा है।

✖ ✖ ✖ ✖